अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

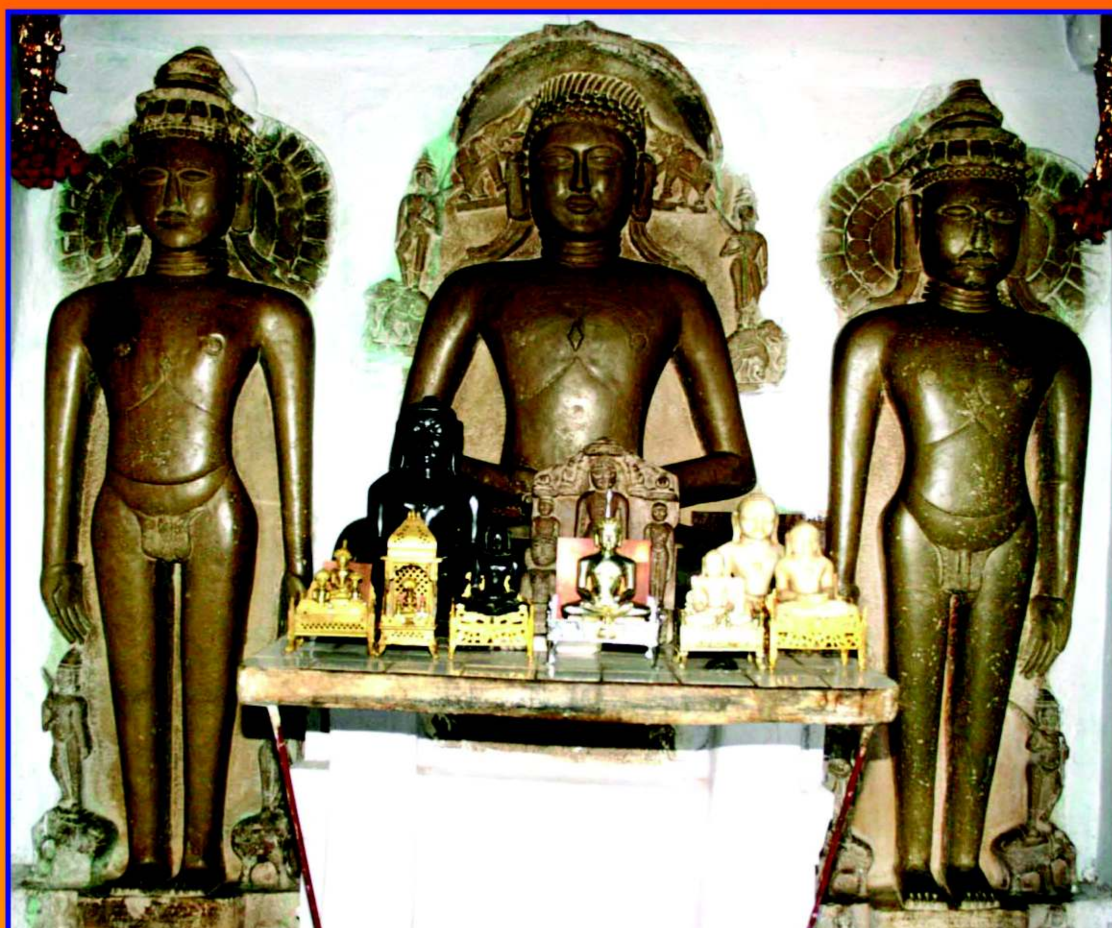

अतिशय क्षेत्र पजनारी, बंडा (म.प्र.)

वीर निर्वाण संवत् - 2544

अंक : पैंतालिस

अश्विन कृष्ण, वि.सं. 2075, सितंबर 2018

वर्ष : ग्यारह

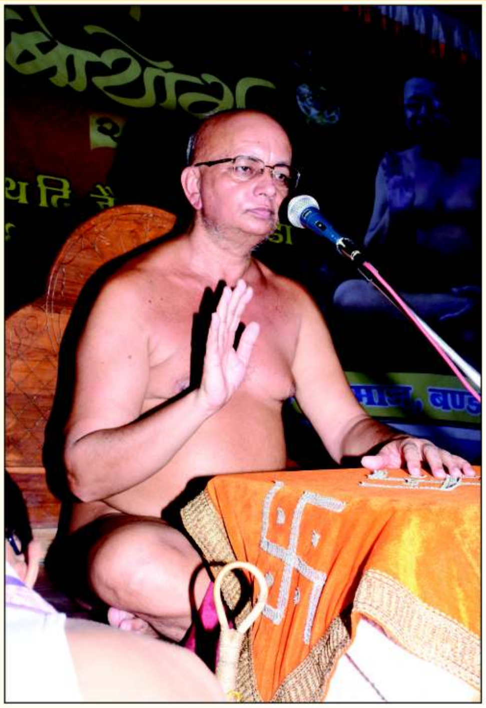

बण्डा नगर में सन् 2018 वर्षायोग स्थापना पर
आशीर्वाद देते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के बण्डा नगर
आगमन पर पधारी आर्यिकाश्री ऋजुमति माताजी ससंघ।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी की भक्ति करते हुए
आर्यिकाश्री ऋजुमति माताजी ससंघ।

सन् 2018 वर्षा योग कलश स्थापना पर ससंघ
मंचासीन आ. आर्जवसागरजी प्रवचन देते हुए।

वर्षा योग के प्रथम कलश के पुण्यार्जक कमलकुमार
जैन कदवाँ अध्यक्ष श्री शांतिनाथ दि.जैन मंदिर बण्डा।

वर्षायोग का मंगलकलश के पुण्यार्जक गौरव जैन पुत्र
टेकचंद जैन उल्दन बण्डा, अध्यक्ष वर्षायोग समिति 2018

सन् 2018 मोक्षसप्तमी पर्व पर बण्डा नगर के
भ.शांतिनाथ जिनालय परिसर में श्री जी की शांतिधारा।

आशीर्वाद व प्रेरणा

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित

आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज।

• परामर्शदाता •

पंडित मूलचंद लुहाड़िया

किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

। सम्पादक।

डॉ. अजित कुमार जैन,

MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स,

कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003

मो. : 7222963457, 9425601161

email : bhav.vigyan@gmail.com

• प्रबंध सम्पादक •

डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक

85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357

• सम्पादक मंडल •

पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)

डॉ. संजय जैन (एडवोकेट), इंदौर (म.प्र.)

डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)

इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)

श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

• कविता संकलन •

पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

• प्रकाशक •

श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन

MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003

मो.: 7024373841

email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

• आजीवन सदस्यता शुल्क •

पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन (स्थायी) सदस्यता	:	1500

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

रजिस्ट्रेशन क्रं. MPHIN/2007/27127

त्रैमासिक **भाव विज्ञान** (BHAV VIGYAN)

वर्ष-ग्यारह
अंक - पैंतालिस

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक — **पृष्ठ**

1. **पर्यूषण-पर्व में गुणों का चिंतन** - प्रा. नरेन्द्र प्रकाश जैन — 2
2. **सम्यक् ध्यान** - श्रीपाल जैन 'दिवा' — 4
3. **प्रवचन प्रमेय** - आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज — 5
4. **आगम-अनुयोग [प्रश्नोत्तर-प्रदीप]** - आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज — 11
5. **सम्यग्ज्ञान-भूषण व सिद्धान्त-भूषण पद हेतु त्रैमासिक धार्मिक प्रश्न-पत्र** — 24
6. **पारसचन्द से बने आर्जवसागर** - आर्यिकारत्नश्री प्रतिभामति माताजी — 26
7. **अति प्राचीनता के प्रमाण** -श्री नाथूलालजी जैन शास्त्री — 31
8. **समाचार** — 40

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

पर्यूषण-पर्व में गुणों का चिंतन

प्रा. नरेन्द्र प्रकाश जैन

फिरोजाबाद *संरक्षक-श्रीभारतवर्षीयदि.जैनशास्त्रीपरिषद्*

किसी मनीषी की एक सूक्ति है - 'गुणवत्ता जगत्पूज्या, गुणी सर्वत्र मन्यते' अर्थात्- संसार में गुण और गुणी की ही पूजा होती है। सभी लोग उसका आदर-सत्कार करते हैं। गुणहीन व्यक्ति को समाज में कभी अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता। अपने भीतर छिपे गुणों के विकास से ही कोई व्यक्ति एक श्रेष्ठ नागरिक बनकर राष्ट्र और समाज के वातावरण को सुखद बना सकता है।

गुण आत्मा की निधि है। उन्हें किसी हाट या बाजार से नहीं खरीदा जा सकता। उन्हें पाने के लिए न तो धन की आवश्यकता है और न किसी अन्य सहारे की। गुणों के विकास की दृष्टि से हर जीव स्वाधीन है। सही श्रद्धा, सही समझ एवं सत्कार्यों से उनका विकास सहज ही होता रहता है। यदि कहा जाए कि गुणों के विकास का ही दूसरा नाम धर्म है तो इसमें किंचित् ही अत्युक्ति नहीं है।

हमारे धर्माचार्यों ने धर्म की व्याख्या अनेक प्रकार से की है। उनमें से एक सर्वमान्य परिभाषा है - **'खमादि भावो हि दसविहो धम्मो'** अर्थात्- उत्तम क्षमादि दस प्रकार की भावनाओं को धर्म कहते हैं। इन दसविध भावनाओं से जैन कुल में जन्मा हर आबाल-वृद्ध भलीभाँति परिचित है। हर वर्ष भाद्रपद में मनाए जाने वाले पर्यूषण पर्व में सभी जैन नर-नारी इनका श्रवण एवं चिन्तन-मनन करते आ रहे हैं। दस लक्षणों से समन्वित इस पर्व का नाम दसलक्षण पर्व भी प्रसिद्ध है।

यह पर्यूषण गुण-पूजा का पर्व है। इसमें किसी व्यक्ति या घटना विशेष का स्मरण न करते हुए दु:ख के मूल कारण अपने ही भीतर कुण्डली मारकर बैठे हुए कुसंस्कार-जनित खोटे भावों या विकारों को अलविदा करने या निकाल बाहर करने की कोशिश की जाती है। जितने भी विकार हैं, वे बाह्य पदार्थों या व्यक्तियों के संसर्ग से उत्पन्न होते हैं। चित्त में विकारों की उपस्थिति ही धर्म-पालन के मार्ग पर आगे बढ़ने में सबसे बड़ी बाधा है। विकारों से मानवीय गुणों के विकास की भावना तिरोहित होने लगती है।

हमारे विकार ही हमारे दु:ख का कारण है। जैनधर्म में विकारों से मुक्ति के दस उपाय-सहनशीलता, विनम्रता, सरलता, सन्तोष, सत्य, संयम, तप, त्याग, अनासक्ति और शील-बताये गये हैं। इन दस उपायों को अपने आचरण का अंग बनाने से यह जीव एक दिन निर्मल और निर्विकार हो जाता है। व्यवहारिक जीवन की सफलता भी इन्हीं के अनुपालन पर निर्भर है।

पर्यूषण पर्व इन दस गुणों की चर्चा और अर्चा का महापर्व है। भारत और भारत से बाहर जहाँ भी जैनों के चालीस या पचास घर क्यों न हों, वहाँ इस पर्व पर इन गुणों के बारे में जानने-समझने की उत्कृष्ट लालसा सभी श्रावक-श्राविकाओं में पायी जाती हैं। इस विषय पर अनेक सन्तों एवं विद्वानों ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। इसी क्रम में युगनायक पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के अनन्य एवं प्रिय

शिष्य पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज की यह कृति लीक से हटकर है। इसकी एक विशेषता तो यह है कि यह पद्यवबद्ध है। गद्य की अपेक्षा पद्य की विधा जनसाधारण में अधिक लोकप्रिय है। गद्य में लिखे हुये विषय को तो एक बार पढ़ लिया और छुट्टी हुई, किन्तु पद्य को लोग बार-बार गाते और गुनगुनाते रहते हैं। इस कृति की दूसरी विशेषता यह है कि पूज्य श्री ने इसमें यथास्थान अनेक पौराणिक प्रसंग या उदाहरण देकर इसे सरस, हृदयग्राही एवं सुवाच्य बना दिया है। स्वाध्यायप्रेमियों के लिये तो यह कृति उपयोगी है ही, नवोदित विद्वानों को भी अपनी प्रवचन-कला को निखारने और प्रभावी बनाने में इससे सहायता मिलेगी।

पूज्य आचार्यश्री अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी संत हैं। निरन्तर स्वाधयाय, चिन्तन-मनन एवं लेखन उनके लिये उतना ही जरूरी है, जितना जरूरी है जीवित रहने के लिए श्वास लेना। सभी जीव अहित से बचें और स्वकल्याण में प्रवृत्त हों, उनकी इस प्रशस्त भावना में ही उनकी इस सतत सृजनात्मकता का रहस्य छिपा है। ऐसे संत साधक की स्व-परहित की यह भव्य भावना प्रणम्य है। इस कृति को लिखकर उन्होंने सुधी पाठकों पर अतीव उपकार किया है।

इस कृति का जैन समाज में व्यापक रूप से स्वागत होगा, इसमें हमें संदेह नहीं।

★

श्रीपाल जैन 'दिवा' के प्रति सद्भावना

जिनवाणी की सेवा से सातिशय पुण्य अर्जन करने वाले, शाकाहार प्रचारक, कविताओं की विधा में परमेष्ठी का गुणानुवादन करने वाले वीतरागी देव, शास्त्र, गुरु के सच्चे उपासक और भाव विज्ञान पत्रिका आदि के सम्पादन से अपनी प्रतिभा निखारने वाले दिवंगत श्री श्रीपाल जैन 'दिवा' के लिए भाव विज्ञान पत्रिका परिवार की ओर से उनके पर भव में परम शांति व भविष्य के लिए मंगलमय अनगणित शुभ कामनाएँ।

प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी के प्रति मंगल भावना

लेखनी की प्रखरता व लालित्य के धनी, साहित्यिक प्रतिभा के खजाने, आशुकवि, निर्ग्रन्थ उपासक, एकान्त व वैनयिक आदि मिथ्यात्व के खण्डक, कटुसत्य के निर्भीक प्रवक्ता, जिनवाणी के संरक्षक, विद्वानों के मनमोहक, सदाचारी दिवंगत प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी के पर भव में सुखद शांति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु भाव विज्ञान पत्रिका परिवार की ओर से अनेका-नेक शुभकामनाएँ।

अंतिम कवर पृष्ठ परिचय

इस माह की भाव विज्ञान पत्रिका के अंतिम कवर पृष्ठ पर प्रकाशित गुरु चित्र फ्रांस के ऐरिक वेनेट्य नामक एक विदेशी व्यक्ति के द्वारा गुरु चरणों में बैठकर अविलम्ब ही तब बनाया गया था जब गुरुवर आर्जवसागरजी तमिलनाडु प्रवास पर पोन्नूरमलै के विशाखाचार्य तपोनिलयं में सन् 2001 सम्बन्धी वर्षावास हेतु पधारे थे। और यही चित्र जुलाई 2001 में प्रकाशित हुई 'श्रुतकेवली' नामक तमिल पत्रिका के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित किया गया था।

सम्यक् ध्यान

(सम्यक्ध्यान शतक की संक्षिप्त समीक्षा)

श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल

संसार में मनुष्य का चंचल मन अनथक रूप से भटकता रहता है। दुश्चिंतन की आँधी में स्थिर नहीं रह पाता। ऐसे मर्कट मन को केन्द्रित करने के लिये ध्यान सशक्त माध्यम है। इसीलिए प.पू. आचार्यश्री आर्जवसागर जी ने 'सम्यक् ध्यान शतक' पुस्तक में 15 वें दोहे में गागर में सागर भरते हुए कहा है -

मन पूरे जग में फिरे, एक जगह ना ध्यान ।
केन्द्रित निज में ध्यान तब, प्रगटे केवल ज्ञान ।।

निज में केन्द्रित होकर निज को ध्यावे तब केवलज्ञान प्रगट होता है। अतः ध्यान ही केवलज्ञान और मोक्ष का द्वार है।

'सम्यक् ध्यान शतक' लघु पुस्तिका में महान ग्रन्थों का ज्ञान समहित कर देना महाकवि आचार्य विद्यासागर जी एवं उनके शिष्यों के ही वश की बात है। इसे ग्रंथ ही कहा जाना चाहिए। जिसमें मंगलाचरण से मंगल प्रारम्भ होकर भूमिका, संसार का लक्षण, मोक्ष का स्वरूप, भव्य का लक्षण, लक्ष्य और सोपान, आत्म हित कैसे, ध्यान साधना हेतु चिन्तन, ध्यान की अवस्थाएँ, ध्यान के योग्य सामग्री, ध्यान हेतु द्रव्य, संहनन, आसन, आहार, बाधक तत्त्व, साधन को लाभ, सुयोग्य अवस्थाएँ, ध्येय व साधना द्रव्य, ध्यान हेतु क्षेत्र, ध्यान हेतु काल, ध्यान हेतु भाव, समता, संयम, सद्भावनाओं के प्रकार, आर्त्तध्यान, इष्टवियोग, अनिष्ट संयोग पीड़ा चिन्तवन, निदान, आर्त्तध्यान के गुणस्थान, रौद्रध्यान, हिंसानन्द, मृषानंद, चौर्यानन्द, परिग्रहानन्द, रौद्र ध्यान के गुणस्थान, धर्म ध्यान, धर्म ध्यान के भेद, आज्ञा विचय, अपाय विचय, विपाक विचय, संस्थान विचय, संस्थान विचय के भेद, पिण्डस्थ ध्यान, पंच धारणाएँ, पृथ्वीधारणा, अग्निधारणा, वायु और जलधारणा, तत्त्वधारणा, रूपस्थ ध्यान, रूपातीत ध्यान, धर्म ध्यान के स्वामी, शुक्ल ध्यान-पृथक्त्ववितर्कवीचार, एकत्व वितर्क अविचार, सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती, व्युपरतक्रियानिवृत्ति, चौदहवें गुणस्थान का काल, शुक्ल ध्यान के गुणस्थान, अंतिम मंगल, प्रशस्ति, ऐसे 60 विषयों पर दोहे जैसे लघु छन्द में ध्यान सागर को कौशल के साथ भर दिया है। एक-एक छन्द मंत्र की महान शक्ति रखता है। जिसका पारायण कर भव्यजीव निज को ध्याने का अभ्यासी हो सकता है।

पुस्तक का आवरण गुरु-शिष्य की ध्यानावस्था का प्रत्यायन करते हुए बड़ा सुन्दर सार्थक लग रहा है। पुस्तक नित्य पाठ हेतु पठनीय, हृदयंगम कर निज का ध्यान करने हेतु प्रेरक मंत्र रूप है।

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति साधुवाद की पात्र है जिसने पुस्तक प्रकाशन का मंगल कार्य किया है। पुस्तक का मूल्य मात्र स्वाध्याय और आद्योपांत पढ़ने तक एक वस्तु का त्याग रूप नियम रखा गया है यह बड़े पुण्य का कार्य है तथा ग्रन्थ का बहुमान बढ़ाया है। एतदर्थ हम सम्यक्ध्यान की उत्तम कृति की प्रभावना के निमित्त सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित है।

प्रवचन प्रमेय

गतांक से आगे........ **-आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज**

आदिम तीर्थंकर प्रभो, आदिनाथ मुनिनाथ।
आधि-व्याधि-अघ-मद मिटे, तुम पद में मम माथ॥
शरण, चरण हैं आपके तारण तरण जहाज।
भव-दधि-तट तक ले चलो, करुणाकर जिनराज॥

अभी-अभी बोलियां हो रही थीं। मैं सोच रहा था कि बोली लेने वाले यह जानते हैं और करने वाले भी जानते हैं कि पैसा अपने से बिल्कुल भिन्न है। तब भी मुझे समझ में यह नहीं आ रहा था कि 2-2, 3-3 बार बोलने के उपरान्त जैसे क्रेन के द्वारा की कोई बड़ी वस्तु उठती है धीरे-धीरे, ऐसी ही बोलियाँ उठ रही थीं, ऐसा क्यों? जबकि धन विभिन्न पदार्थ है उसके साथ हमारा कोई सम्बन्ध नहीं फिर भी ऐसा लग रहा था कि जैसे गोंद से आपका और उन नोटों का गठबन्धन हो गया है। नोट ट्रेजरी में हैं और आप यहाँ आकर बैठे हैं, फिर भी नहीं निकल रहे हैं। बोली लेने वालों के तो नहीं निकल रहे हैं क्योंकि उन्हें मोह है, लेकिन यहाँ जो बोली करा रहे थे वह भी दो के साथ-साथ ढाई बोल रहे थे यानि उनका भी मोह और बढ़ रहा था।

आज मोह को छोड़कर ही शरीरातीत अवस्था प्राप्त हुई। कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है आत्मा के साथ, देख लीजिए। आज द्रव्य कर्म से, भावकर्म से और नोकर्म से, इन तीन कर्मों से अतीत होकर के उस आत्मा का जन्म हुआ है। सिद्धपरमेष्ठी की ही सही जन्म जयन्ती है आज के दिन। अनन्तकाल के लिए यह जन्म, ज्यों का त्यों रहेगा। अनन्तकाल के लिए मरण का मरण हो चुका अब। ऐसा उत्पाद हुआ, और ऐसा उत्पात जैसा हुआ कि कहना सम्भव नहीं। यह तो ऋषभनाथ ही जान सकते हैं। हम नहीं जान सकते।

आज इस बात को देखने (निर्वाणकल्याण) में इतना आनन्द आता है जितना कि अन्य में नहीं आता। निर्वाण कल्याण में मुझे विशेष ही आनन्द आता है। हांलाकि दीक्षाकल्याणक, केवलज्ञान कल्याणक भी कल्याणक है, लेकिन निर्वाण कल्याणक को देख अपूर्व ही आनन्द उमड़ता है। कल तक तो समवसरण की रचना थी, अब समवसरण बिखर गया। वृषभनाथ भगवान का समवसरण लगभग 29 दिन पहले ही बिखर गया, मुक्ति पाने से पहले। यानि 20 दिन तक समवसरण के बिना रहे वे। समवसरण में विराजमान होते हैं तो अर्हन्त परमेष्ठी माने जाते हैं। छत्र, चंवर, सिंहासन और कमल के चार अंगुल ऊपर अधर में बैठे रहते हैं। अर्हन्त परमेष्ठी एक प्रतिमा जैसे हो जाते हैं। समवसरण में जब तक विराजमान रहेंगे तो उन्हें केवलज्ञान तो भले ही रहा आवे, लेकिन मुक्ति तीनकाल में मिलने वाली नहीं। किसी को भी आज तक कुर्सी पर बैठे-बैठे, किसी संस्था के संचालक को मुक्ति नहीं मिली। केवलज्ञान होने में तथा मुक्ति में उतना ही अन्तर है, जितना कि 15 अगस्त और 26 जनवरी में। केवलज्ञान हुआ यह स्वतन्त्रता दिवस है और मुक्ति गणतन्त्र दिवस। यह बिल्कुल नियम है कि स्वतन्त्रता के लिए पहले बात होती है, और कह दिया जाता है कि तुम्हें स्वतन्त्रता मिलेगी-दी जाएगी। लेकिन सत्ता जो है वह गणतन्त्र दिवस के दिन आती है। आज भगवान को अपनी निजी सत्ता हाथ लगी, जो कि पर

(कर्म) के हाथ चली गई थी मानो, उसके लिए उन्होंने बहुत कोशिश की, अनशन भी प्रारम्भ किये, तब कहीं जाकर के सत्ता मिली है। आप सोचते हैं सत्ता को ले लेना आसान है, लेकिन नहीं दूसरों की सत्ता पर अधिकार नहीं करना है। अपनी सत्ता को प्राप्त करने के लिए आचार्यों ने कहा है कि अन्तर्मुहूर्त्त पर्याप्त है, पर यह सब व्यायाम करना आवश्यक है तभी जो ग्रन्थियां हैं छूट सकेंगी, जो कि आपकी नहीं हैं। उसी साधना में कठिनाई है। इसलिए साधु की यह विशेषता होती है कि वह केवल आत्मसाधना करता है। वही साधु हुआ करता है। कुछ इससे आगे के होते हैं जो अपनी साधना को करते हुए भी दूसरों को उपदेश दे देते हैं वे उपाध्याय परमेष्ठी कहलाते हैं। यदि कोई उपदेश ग्रहण कर मार्ग को, पथ को अपनाना चाहता है तो उसे शिक्षा-दीक्षा देकर के पथ के ऊपर आरूढ़ करा देते हैं। ''चरति आचारयति वा इति आचार्य:''। वह आचार्य परमेष्ठी कहलाते हैं। और ''मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्। ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये''॥ अरहन्त परमेष्ठी वे माने जाते हैं जो कि हितोपदेशी होते हैं, सर्वज्ञ होते हैं, मोक्षमार्ग नेता होते हैं।

अरहन्तों में तीर्थंकर भी होते हैं जो कि सिद्ध परमेष्ठी को नमोऽस्तु करते हैं। ऐसा क्यों? सभी के आराध्य देवता तो सिद्ध ही हुआ करते हैं। शेष सारे के सारे आराधक हैं, अरहन्त परमेष्ठी को मुनि माना जाता है। सिद्ध परमेष्ठी मुनियों की कोटि में नहीं आते। वे तो मुनियों से पूज्य हैं, शाश्वत सत्य हैं। अर्हन्त परमेष्ठी को भी साधु-जीवन की उपासना करनी पड़ती है। तब यह पद लिया ही क्यों उन्होंने? पूर्व जीवन में उन्होंने भावना भायी थी कि ''क्षेमं सर्वप्रजानां''। दर्शनविशुद्धि आदि षोडशभावनाएँ, जिनमें ''सबका कल्याण हो, संसार में तिलतुष मात्र भी सुख नहीं , सभी को सही-सही दिशा बोध मिले, इन्हीं का तो फल है। प्रत्येक सम्यग्दृष्टि को भी ऐसी भावना नहीं हुआ करती, यदि होने लग जाए तो सभी को तीर्थंकर पद के साथ मुक्ति मिले। पर ऐसा असम्भव है। असंख्यातों में एक-आध ही सम्यग्दृष्टि ऐसी भावना वाले होते हैं।

अरहन्त परमेष्ठी की अवस्था कोई भगवद् अवस्था नहीं है। उन्हें उपचार से भगवान कह देते हैं। उनके चार धातिया कर्मों के नाश हो जाने पर, अब जन्म से छुट्टी मिल गई, इसी अपेक्षा से या उपचार से कह देते हैं। दूसरी बात और कहूँ- उनको (अरहन्त) मुक्ति कब मिलती है? अरहन्त परमेष्ठी को मुक्ति तीनकाल में नहीं मिल सकती। आचार्य परमेष्ठी को भी नहीं मिल सकती, उपाध्याय परमेष्ठी को भी नहीं मिल सकती। मुक्ति के पात्र साधु परमेष्ठी हैं। मोक्षमार्ग के नेतृत्व को अपनाये रहेंगे जब तक, तब तक मुक्ति नहीं। उनके समवसरण में बैठे-बैठे कोई उपदेश सुनकर के भावलिंगी मुनि को मुक्ति हो सकती है, पर समवसरण के संचालक (तीर्थंकर) को मुक्ति नहीं होती। कितनी बड़ी बात है। हम लोग कम से कम कुर्सी का तो मोह छोड़ दें, कुर्सी मिल भी नहीं रही है सबको। लेकिन सभी झगड़ा करते हैं कुर्सी के लिए मात्र उस मोह के कारण। चुनाव भी लड़ते हैं। आज तो तीर्थंकर प्रभु की भी कुर्सी (सिंहासन) छूट गयी। तीन लोक में कहीं भी ऐसी सम्पदा नहीं मिलती है। इन्द्र की आज्ञा से कुबेर के द्वारा समवसरण की रचना होती है, सारे भण्डार को खाली करके। समवसरण की रचना केवलज्ञान उत्पन्न होने के उपरान्त क्यों हुई? सारी की सारी सम्पदा पहले भी कुबेर के भण्डार में थी, वह अपने लिए अथवा इन्द्र के लिए समवसरण की रचना क्यों नहीं कर सकता? नहीं! यह तो मात्र तीर्थंकरप्रकृति के उत्कृष्ट पुण्य का विपाक है। उन्हीं के लिए यह सब कुछ सम्पदा मिलती है।

आचार्य परमेष्ठी भी जब तक आचार्य परमेष्ठी बने रहेंगे तब तक श्रेणी में आरोहण नहीं हो सकता। उपाध्याय परमेष्ठी को भी श्रेणी नहीं मिलेगी। और यहाँ तक कि तीर्थंकर को भी, जब तक अर्हन्त परमेष्ठी के रूप में रहेंगे तब तक मुक्ति नहीं। सब कुछ यहाँ पर छोड़ना पड़ता है। सारा का सारा ठाट-बाट यहीं पर धरा रह जायेगा। आठ कर्मों को भी यहीं छोड़ जायेंगे और जाकर ऊर्ध्वलोक में विराजमान हो जायेंगे, अनन्तकाल के लिये।

इससे सिद्ध हो गया कि साधु की साधना छठवें गुणस्थान से प्रारम्भ होकर चौदहवें गुणस्थान तक चलती है। आप लोगों के यहाँ भी चौदह कक्षायें होती हैं। उनमें एक स्नातक और एक स्नातकोत्तर। ये चौदह गुणस्थान संसारी जीव की चौदह कक्षाएं हैं। एक-एक गुणस्थान चढ़ते-चढ़ते अर्हन्त परमेष्ठी स्नातक हुए हैं और तेरहवें गुणस्थान में प्रवेश हुआ और वहां पर अन्तर्मुहूर्त्त रह करके स्नातकोत्तर हुए। ज्यों ही स्नाकोत्तर हुए तो निरुपाधि अवस्था की उपलब्धि हो गई उन्हें। जब तक कक्षाएं शेष रहती हैं तब तक छात्र ही माना जाता है। इसी प्रकार चौदहवें गुणस्थान तक तो सभी मुनि महाराज माने जाते हैं। किन्तु चौदहवें गुणस्थान के ऊपर चले जाते हैं तो वे नियम से सिद्ध परमेष्ठी होते हैं, शाश्वत सिद्धि प्राप्त हो जाती है उन्हें। धन्य है यह दिन, इस प्रकार से आत्मा का विकास करते-करते अन्त में उन्हें इस पद की उपलब्धि हुई जो कि आत्मोपलब्धि कही जाती है। उन्होंने अपना कुछ भी नहीं छोड़ा। जो पराया था वह सारा का सारा यहीं पर रह गया। जो निजी था वह शाश्वत सत्य बन गया। एक उदाहरण देता हूँ कि अरहन्त और सिद्ध परमेष्ठी में कितना अन्तर है।

दूध है और घृत है। दोनों एक दूध में विद्यमान रहते हैं। पर जब आप दूध पीते हैं तब घृत का स्वाद नहीं आता आपको। घी, दूध में ही है परन्तु घी का स्वाद नहीं आता। घी का स्वाद अलग है और दूध का अलग। इसी तरह दूध की गन्ध और घी की गन्ध की बात है। दूध की गन्ध दूर से नहीं आती जबकि घी की महक तो कहीं रखो अर्थात् दूर से भी आती है। दूसरी, दूध के द्वारा अर्थात् दूध से भरे बर्तन में आप अपनी मुखाकृति को नहीं देख सकते जबकि घी में आपकी मुखाकृति स्पष्ट दिखाई दे जाएगी। दूध में कभी मुख नहीं झलकेगा। यह बात अलग है कि मुख का मात्र बाहरी आकार ही दिखे। यानि दूध का आपका अवतरण नहीं हो सकता। तीसरी बात, दूध हमेशा कच्चा होता है अर्थात् कभी भी पर्यायान्तर (दही, तक्र) को प्राप्त हो जाता है, लेकिन घी में अवस्थानन्तर अब संभव नहीं, क्योंकि वह पूर्ण शुद्ध हो गया है। चौथी बात दूध से कभी भी प्रकाश नहीं किया जा सकता अर्थात् दीपक में भरने पर प्रकाश नहीं देता जबकि घी सदा ही प्रकाश देता है जब आप चाहें। इसीलिए घी से आरती भी उतारी जाती है, दूध से नहीं। पांचवीं बात, दूध में देखें तो उसकी पूर्णता (गहराई) नजर नहीं आती, जबकि घी में देखने पर उसकी सतह तक स्पष्ट दिखाई देता है। उससे पता चल जाता है कि कितना घी है। ऐसा ही अन्तर सिद्ध और अर्हन्त में होता है। क्योंकि सिद्ध परमेष्ठी शुद्ध तत्त्व रूप से परिणमन करने लगे। एक कांच होता है और एक दर्पण। दोनों में जितना अन्तर है उतना ही सिद्ध और अर्हन्त में है। सिद्ध परमेष्ठी कांच होते हैं, अर्हन्त परमेष्ठी दर्पण। कांच तो शुद्ध साफ होने से जो कुछ भी आर-पार है स्पष्ट दिखा देता है परन्तु दर्पण हमारी दृष्टि को पकड़ लेता है, हम उस पार नहीं देख सकते दर्पण से।

इस प्रकार होने पर, णमो ''अरहंताणं'' ऐसा क्यों कहा जाता है पहले? कारण यही है कि सिद्ध-परमेष्ठी

हमें दिखते नहीं और अर्हन्त परमेष्ठी हमें दीखते हैं, उपदेश देते हैं। सिद्ध प्रभु हितोपदेशी नहीं। सर्वज्ञ तो हैं, कर्मों से मुक्ति भी हैं पर हितोपदेशी नहीं। हम तो स्वार्थी हैं। जिसके द्वारा हमारा काम निकले उन्हीं को हम पहले याद कर लेते हैं। अर्हन्त परमेष्ठी के द्वारा हमें स्वरूप का उद्बोधन मिलता है, एक प्रकार से नेतृत्व भी करते हैं और चल भी रहे हैं। इसलिए अर्हन्त परमेष्ठी को इन मूर्त आखें से देख सकते हैं। सर्वज्ञत्व को हम देख नहीं सकते, यह भीतरी भाव है। हम भगवान के दर्शन करते हैं, लेकिन उनके अनन्तगुणों में से एक के अलावा शेष गुणों को देख नहीं सकते हैं। मात्र वीतरागता वह गुण है जो दिखे बिना रह भी नहीं सकता। वीतरागता हमारी आँखों में आ जाती है। भगवान को देखने से उनके कोई भी ज्ञान का पता नहीं चलता कि उनके पास केवलज्ञान है कि नहीं अथवा श्रुतज्ञान या मतिज्ञान। कुछ भी नजर नहीं आता मात्र नासादृष्टि पर बैठे वीतरागमुद्रा के। केवलज्ञान हमारी दृष्टि का विषय भी नहीं बन सकता, वह मात्र श्रद्धान का विषय है। लेकिन मुद्रा के देखने से ज्ञान हो जाता है कि हमारे प्रभु कैसे हैं? हमारे प्रभु वीतरागी हैं। **वीतरागता आत्मा स्वभावभूत गुण है। वीतरागता के बिना हमारा कल्याण नहीं हो सकता। इसलिए सम्यग्दृष्टि की दृष्टि में केवलज्ञान नहीं झलकता, सर्वज्ञत्व नहीं झलकता, किन्तु मिथ्यादृष्टि की दृष्टि में भी भगवान की वीतरागता झलकती है। इसलिए वह भी बिना विरोध के वीतराग के चरणों में नतमस्तक हो जाता है।** यदि अरहन्त भगवान हमारे लिए पूज्य हैं तो वीतरागता की अपेक्षा से ही। पूरा का पूरा संसार आकर उनकी पूजा करता है। कौन से भगवान सही हैं? तो हर कोई कहेगा- जो रागी है, वह सही नहीं, जो द्वेषी है वह भी नहीं, जो परिग्रही वह भी नहीं। लेकिन जो वीतराग हो बैठे हैं, इनके पास कितना ज्ञान है, इससे किसी को कोई मतलब नहीं। वीतरागता जहाँ कहीं नहीं मिल सकती है। इसलिए धन्य है वह घड़ी आदिनाथ के लिए, जब उन्होंने अपने आपको इस संसार से पार कर लिया तथा हमारे लिये एक आदर्श प्रस्तुत किया। युग-युग व्यतीत हो गये, इस प्रकार का कार्यक्रम किये। यद्यपि संसार अनादिकाल से चल रहा है तो सिद्ध होने का क्रम भी अनादि ही है, फिर भी हम लोगों का नम्बर सिद्धों में नहीं आ पाया। अतः हमें अब इसके लिये पुरुषार्थ करना होगा। एक ही पुरुषार्थ है, मोक्ष पुरुषार्थ जो आज तक नहीं किया।

जानने के लिये तो तीनलोक हैं, परन्तु छद्मस्थ के ज्ञान से यह कार्य नहीं बनने वाला। और छोड़ने का मात्र राग, द्वेष और मोह, ये तीन हैं। इन राग, द्वेष और मोह को छोड़े बिना हमारा ज्ञान सही नहीं कहलाएगा। इसलिए संघर्ष करो और जो कुछ भी करना पड़े, करो, मात्र राग-द्वेष-मोह छोड़ने के लिए। जिसने संघर्ष किया, वह अपनी आत्मसत्ता को लेकर के (सिद्ध परमेष्ठी बन) बैठ गया। उसका साम्राज्य चल गया। आज तक जो नौकर था (शरीर); वह सेठ बन गया। जो सेठ था (आत्मा) वह नौकर की चाकरी कर रहा है, गुलामी कर रहा है। इस शरीर के पीछे क्या-क्या अनर्थ करना पड़ता है इस आत्मा को। कैसे-कैसे परिणाम करता रहता है। आप्तपरीक्षा में विद्यानन्द जी महाराज ने लिखा है कि-

ततो नेशस्य देहोऽस्ति प्रोक्तदोषानुषङ्गगः।
नापि धर्मविशेषाऽस्य देहाभावे विरोधतः॥

उन्होंने इसको (शरीर को) जेल बताया है। इसीलिये कल तक भगवान को अनन्तसुख था लेकिन

अव्याबाध नहीं था। कुछ लोग पूछते हैं मुझसे- महाराज! अनन्तसुख और अव्याबाधसुख में क्या अन्तर है? बहुत अन्तर है। मैं कहता हूँ- जैसे जेल में किसी को कह दिया ''कल तुझे जेल से छुटकारा मिल जाएगा।'' अभी नहीं मिला है। जब तक जेल से बाहर नहीं जायेगा तब तक वस्तुतः सुख नहीं है। सुखानुभव के लिये तो जेल से बाहर आना होगा। जिस प्रकार जेल से बाहर आते समय, जेल का जो ड्रेस होता है, एड्रेस होता है, सबका सब उतार दिया जाता है। उसी प्रकार यह संसार का ड्रेस है, इसको छोड़ने पर ही सही सुख-अव्याबाध सुख मिलता है। यही अन्तर है अनन्तसुख और अव्याबाधसुख में। लेकिन हम हैं कि एक ड्रेस के ऊपर और ड्रेस पहनते जा रहे हैं। और यूं सोचते हैं कि तुम्हारे पास तो ऐसा ड्रेस ही नहीं, ऐसा मुझे अभी तक मिला ही नहीं था। उन सबको छोड़कर आज ऋषभनाथ सिद्ध हो गये। और क्या-क्या छोड़ दिया उन्होंने? तीनों कर्मों (द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म) को छोड़ दिया और साथ-साथ। ''औपशमिकादिभव्यत्वनां च'' औपशमिक भाव, क्षायोपशमिक भाव आदि भी छोड़ दिया। इतना ही नहीं जो परिणामिक भाव में भव्यत्व भाव था उसको भी छोड़ दिया। क्या मतलब है महाराज? मतलब समझाते हैं जैसे-

आप स्टेशन पर चले गये। आपको देहली जाना है। रेल का टिकिट ले लिया, जितने पैसे मांगे, उतने पैसे दे दिये। टिकिट लेकर रख लेते हैं। कहां रखते हैं। वहाँ रखते हैं महाराज! जहाँ गुम न सके। सब कुछ सामान गुम जाए संभव है लेकिन टिकिट गुम जाए तो क्या होगा? कम से कम दोनों कान पकड़ो और उठ्ठक-बैठक करो स्टेशन पर, (आजकल यह नहीं होता) तलाशी होगी, कहाँ से आये, क्यों आये, कहाँ जा रहे हो, ये सभी प्रश्न और उसके साथ सजा या जुर्माना। अतः अच्छे ढंग से रख लेते हैं। ज्यों ही स्टेशन आ गया, प्लेटफार्म आ गया। गाड़ी रुकी और उतर जाते हैं उस समय वह टिकिट, टिकिट-चेकर के हाथ में थमा देते हैं और गेट के पार हो जाते हैं। टिकिट नहीं देते हैं तो बाहर नहीं जाने देगा। क्योंकि टिकिट यहीं तक के लिए था। बाहर चले जाने पर टिकिट का कोई काम नहीं। चेकर टिकिट को लेकर फाड़ देता है। वह जब फाड़ता है तब आप रोते नहीं, दुःखी नहीं होते। कारण, अब फाड़ो या अपने पास रखो, यह सभी कुछ तुम जानो। हम तो अपने स्थान पर आ गये।

इसी प्रकार सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की अभिव्यक्ति का कारणभूत जो भव्यत्व परिणाम उत्पन्न हो गया था वह इनके साथ ही समाप्त हो गया, हो जाता है। जिस तरह टिकिट स्टेशन पर। चौदहवें गुणस्थान की वार्डर आते ही यह रत्नत्रय की टिकिट को कोई भी ले ले, क्योंकि संसार की अपेक्षा से है। मेरा ज्ञायक तत्त्व तो कोई भी ले नहीं सकता। ऐसे में एक समय में सात राजू पार करके फिर वहाँ लोक के शिखर पर जाकर विराजमान हो जाते हैं।

यहाँ पर यह शंका हो सकती है कि ऊर्ध्वगमन आत्मा का स्वभाव है, जो स्वभाव होता है वह अमिट होता है, अनन्त होता है फिर वहीं तक जाकर क्यों रुक गये सिद्ध भगवान? भगवान कुन्दकुन्ददेव ने नियमसार में कहा है धर्मास्तिकाय के अभाव के कारण, लोक के शिखर पर जाकर के वे सिद्ध प्रभु विराजमान हो जाते हैं। उनकी मात्र वह सात राजू की योग्यता नहीं किन्तु उनकी योग्यता तो अनन्त है, किन्तु धर्मास्तिकाय के अभाव के कारण आगे गमन नहीं होता।

इस प्रकार तो उन्होंने अपनी गति को प्राप्त कर लिया। अब आप भी फेरी के बाद अपनी-अपनी गति पकड़ेंगे। किसी की मोटर पर, किसी की मोटरसाइकल पर तो किसी की साइकल पर। आप पूछ सकते हैं कि महाराज! आप भी तो गति करेंगे, कौन-सी और किस ओर करेंगे? भैय्या! हमारी सदा गति रहती है। कहीं टिकती नहीं । ना हमारे पास ड्रेस है और ना ही एड्रेस। भगवान का कहना है कि ''ड्रेस रखोगे तो पकड़ में आ जाओगे। एड्रेस रखोगे तो पुलिस आ जायेगी। इसलिए बिना ड्रेस, एड्रेस के रहो''। इसलिए अनियत विहार करता हूँ, पता नहीं पड़ता। सदा गति तभी तो होती है। ऐसा होना भी आवश्यक है।

आप सभी ने पांच-छह दिनों में जो कुछ भी देखा, सुना, अध्ययन किया, मनन किया, भावना की, वह वस्तुत: दुनियां में कहीं भी चले जायें, मिलने वाली नहीं। कई दुकानें मिलेंगी, लेकिन इस प्रकार की चर्या, दृश्य कहीं भी नहीं मिलेगा। यहाँ पर कोई कंडीशन (शर्त) नहीं है।''विदाउट कंडीशन'' ही आत्मा का स्वभाव है। कंडीशन से ही दु:ख का अनुभव हो रहा है। उस भव्यत्व की टिकिट को छोड़कर के भी उन्होंने मार्ग को पूरा कर लिया और मंजिल पा ली। धन्य है यह मोक्षमार्ग, धन्य है यह मोक्ष और धन्य हैं वे, जिन्होंने मोक्ष और मोक्षमार्ग का कथन किया। यह स्वरूप अनन्तकाल से चला आ रहा है, आज हमें भी उसका पाठ पढ़कर के अपने जीवन में उपलब्ध करने का प्रयास करना है।

''भगवान महावीर की जय'' (केसली 11-3-86 परिनिर्वाणगमनवेला)

जैन धर्म में भाव का महत्वपूर्ण स्थान-आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज

आचार्यश्री ने प्रवचन में कहा कि जैन धर्म में भाव का महत्वपूर्ण स्थान है। आचार्यश्री ने उदाहरण के माध्यम से बताया कि जब वे आहार के लिए निकलते हैं तो उन्हें हाथों से इशारा कर बुलाया तो नहीं जा सकता लेकिन जो लोगों की आवाज और शरीर बड़ा होता है वे जोर-जोर से नमोस्तु कर पड़गाहन करते हैं जबकि जिसकी आवाज बांसुरी की तरह होती है वे अपने सिर को हिलाकर एवं हाथों में रखे कलश को जोर जोर से हिलाकर पड़गाहन करते हैं इससे उनके भावों का पता चलता है कि वे कितने उत्सुक होकर नवधा भक्ति पूर्वक पड़गाहन कर रहे हैं। आचार्यश्री ने एक और उदाहरण देकर बताया कि जब आप लोग पूजा करते हो तो एक व्यक्ति को ही आगे आकर द्रव्य चढ़ाना होता है तो उस व्यक्ति के पीछे वाले उनके हाँथ को छूकर एक के पीछे एक हाँथ लगाकर चैन बना लेते हैं जिससे सभी को उसका फल प्राप्त होता है और थाली में जितने चावल है लगभग सबके हिस्से में दो-दो चांवल तो आ ही जाते हैं इस प्रकार जो द्रव्य चढ़ाता है उसको पुण्य तो मिलता ही है और जो हाँथ लगाते हैं उनको भी दोगुना पुण्य मिलता है और जो हाँथ नहीं लगाता है और सिर्फ ताली बजाता है तो उसको भी चार गुना पुण्य मिलता है। इसे ही कृत कारित अनुमोदन कहा जाता है जिसे हम अपने मन, वचन और काय से भावपूर्ण करते हैं।

सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु भाव-विज्ञान धार्मिक परीक्षा बोर्ड, भोपाल द्वारा स्वीकृत

आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित

आगम-अनुयोग

[प्रश्नोत्तर-प्रदीप]

-मंगलाचरण-

प्रथम तीर्थ के कर्त्ता प्रभुवर, आदिनाथ को करूँ नमन।
चौबीसी के अन्तिम जिनवर, महावीर हैं परम शरण॥
तीर्थंकर से उदित तीर्थ में, है आगम-अनुयोग प्रधान।
जिसे कहूँ मैं भविकजनों को, मिले मोक्ष-पद शीघ्र महान॥

प्र.1 आगम किसे कहते हैं ?

उ. जिनेन्द्र भगवान कथित सर्व पदार्थ प्रकाशक वचन आगम कहलाता है।

प्र. 2 आगम के छह विशेषण कौन-से हैं ?

उ. आगम के 1. अर्हंत कथित, 2. अखण्डित, 3. अविरोधी, 4. धर्मोपदेशी, 5. हितकर्त्ता और 6. मिथ्यात्व खण्डक ऐसे छह विशेषण होते हैं।

प्र. 3 आगम कथन में पंच ध्यातव्य रूप मन्तव्य कौन-से हैं ?

उ. आगम कथन में शब्दार्थ, नयार्थ, मतार्थ, आगमार्थ और भावार्थ रूप पांच ध्यान रखने योग्य मन्तव्य (बातें) हैं।

प्र. 4 आगम के व्याख्यान में शब्दार्थ का तात्पर्य क्या है ?

उ. आगम के व्याख्यान में शब्दार्थ का तात्पर्य शब्द का सम्यक् अर्थ बतलाना है।

प्र. 5 आगम के उपदेश में नयार्थ का अर्थ क्या है ?

उ. आगम के उपदेश में नयार्थ का अर्थ व्यवहार व निश्चय आदि नयों का अवलम्बन लेकर कथन शैली अपनाना नयार्थ कहलाता है।

प्र. 6 आगम में मतार्थ से क्या तात्पर्य है ?

उ. आगम में मतार्थ से तात्पर्य सांख्य, बौद्ध आदि विभिन्न मतों के संदर्भ में विचार विमर्श करना है।

प्र. 7 जैनदर्शन में आगमार्थ किसे कहते हैं ?

उ. जैन दर्शन में परमागम और आचार्य परम्परा से अविरोध कथन-शैली का होना आगमार्थ कहलाता है।

प्र. आगम-कथन-शैली में भावार्थ किसे कहते हैं ?

उ. 8 आगम-कथन-शैली में जिनागम के ज्ञान से गुण-दोषों के सम्बन्ध में ग्रहण व त्याग के व्याख्यान को भावार्थ कहते हैं।

प्र. 9. आगम पद्धति किसे कहा जाता है ?

उ. वीतराग सर्वज्ञ प्रणीत सप्त तत्त्वों, छह द्रव्यों आदि के सम्यक् श्रद्धान, ज्ञान और आचरण रूप प्रतिपादन को आगम पद्धति कहा जाता है।

प्र. 10 आगम ग्रन्थ (शास्त्र) अध्ययन करने की या वीतराग की देशना प्राप्त करने की योग्यता किस आचरणवान मानव के पास होती है ?

उ. आगम अध्ययन या वीतराग-देशना की योग्यता अष्टमूलगुण धारक अर्थात् मद्यत्याग, मधुत्याग, मांस त्याग, रात्रिभोजन त्याग, पंच उदुम्बर फल त्याग, जिनेन्द्र देव दर्शन, जीवदया पालन और छना-जलपान ऐसे अष्ट नियम-संकल्प धारक के पास होती है।

प्र. 11 वक्ता किसे कहते हैं ?

उ. धर्म के उपदेष्टा को वक्ता कहते हैं।

प्र. 12 धर्मोपदेष्टा कितने प्रकार के होते हैं ?

उ. धर्मोपदेष्टा तीन प्रकार के होते हैं- 1. सर्वज्ञ तीर्थंकर या सामान्य केवली, 2. श्रुतकेवली मुनीश्वर और 3. आरातीय अर्थात् शुद्ध परम्परा से ज्ञान प्राप्त आचार्य।

प्र.13. धर्मोपदेष्टा किन गुणों से सम्पन्न होता है ?

उ. जो प्राज्ञ है अर्थात् समस्त शास्त्रों के रहस्य (मर्म) को जानता है, लोक व्यवहार से परिचित है, कुशील या धनादि समस्त आशाओं से रहित है, प्रतिभाशाली है, शान्त है, प्रश्न होने के पूर्व ही उत्तर देने में सक्षम है, श्रोताओं के प्रश्नों को सहन करने में समर्थ है (अर्थात् प्रश्न सुनकर न तो घबराता है और उत्तेजित होता है), दूसरों के मनोगत भावों को जानने वाला है, शीलाचारादि अनेक गुणों से सम्पन्न है और जो दूसरों की निंदा न करता हुआ स्पष्ट और मधुर शब्दों में उपदेश को करने वाला है उसे सुयोग्य गुणवान धर्मोपदेष्टा कहते हैं।

प्र. 14 श्रोता कौन कहलाता है ?

उ. जो सम्यग्दृष्टि आत्मा शास्त्र के ग्रहण व धारण करने में समर्थ तथा विनय गुण से अलंकृत और संयमित होता है वह श्रोता कहलाता है।

प्र. 15 उत्तम श्रोता में हंस सदृश श्रोता से क्या तात्पर्य है ?

उ. जिस तरह मिले हुए दुग्ध और जल को भिन्न करते हुए हंस जल को छोड़ दुग्ध मात्र का पान कर लेता है उसी तरह उत्तम श्रोता अन्य अनावश्यक विषयों को छोड़ स्वात्म प्रयोजनीय धार्मिक, आध्यात्मिक विषय मात्र को ग्रहण करने वाला होता है।

प्र. 16 अनुयोग किसे कहते हैं ?

उ. जिनवाणी के उपदेश की आगम पद्धति को अनुयोग कहते हैं।

प्र. 17 आगम में अनुयोग के प्रकार कौन-से हैं ?

उ. आगम में अनुयोग के प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग रूप से चार प्रकार होते हैं।

प्र. 18 प्रथमानुयोग किसे कहा जाता है ?

उ. एक पुरुष सम्बन्धी चरित या त्रेसठ शलाका महापुरुष सम्बन्धी कथा रूप पुराण को प्रथमानुयोग कहा जाता है।

प्र. 19 प्रथमानुयोग के ज्ञान का फल क्या है ?

उ. प्रथमानुयोग भव्यों के लिए अत्यन्त उपकारी है, इसके ज्ञान करने से जीवों को सम्यग्दर्शनादि रूप बोधि और धर्मध्यान, शुक्लध्यान रूप समाधि की प्राप्ति होती है।

प्र. 20 त्रेशठ शलाका पुरुष कब उत्पन्न होते हैं ?

उ. त्रेशठ शलाका पुरुष भोग भूमि के अनन्तर उत्पन्न होते हैं।

प्र. 21 भोग-भूमि किसे कहते हैं ?

उत्तर जहाँ उत्कृष्ट ज्योर्तिमय दस प्रकार के कल्पवृक्ष होते हैं और उन कल्पवृक्षों से ही मनुष्यों की उपजीविका रूप जीवनशैली चलती है ऐसे स्थान को मनुष्यों से संबधित भोग-भूमि कहते हैं। जहाँ खेती आदि षट्कर्म एवं वर्णादिक की व्यवस्था नहीं होती।

प्र. 22 भोग-भूमि में पाये जाने वाले कल्पवृक्षों का लक्षण क्या है ?

उ. जो भोग-भूमि में मनुष्यों को अपने-अपने मन की कल्पित वस्तुओं को दिया करते हैं वे कल्पवृक्ष कहलाते हैं।

प्र. 23 ये कल्पवृक्ष वनस्पतिकायिक या देवोपनीत वृक्ष होते हैं क्या ?

उ. सभी कल्पवृक्ष न तो वनस्पतिकायिक रूप हैं और न कोई व्यन्तरादि देव रूप ही हैं, किन्तु इनकी विशेषता यह है कि ये सभी पृथ्वी रूप होते हुए भी जीवों को उनके पुण्यकर्म का फल देते हैं।

प्र. 24 भोग-भूमि-गत मनुष्यों के मनोरथों को पूर्ण करने कल्पवृक्ष कौन-से हैं ?

उ. भोग-भूमि में पानांग, तूर्यांग, भूषणांग, वस्त्रांग, भोजनांग, आलयांग, दीपांग, भाजनांग, मालांग और तेजांग नामक कल्पवृक्ष अपने नाम के अनुरूप मनवांछित वस्तुओं को देने में सक्षम होते हैं।

प्र. 25 भोग-भूमि सम्बन्धित पानांग कल्पवृक्ष मनुष्यों के लिए कौन-से पेय प्रदान करते हैं ?

उ. पानांग नामक कल्पवृक्ष भोगभूमिजों को मधुर, सुस्वादु, षट्रसों से युक्त, प्रशस्त, अतिशीत और तुष्टि एवं पुष्टि को करने वाले ऐसे बत्तीस प्रकार के पेय द्रव्यों को दिया करते हैं।

प्र. 26 भोग भूमि में तूर्यांग नामक कल्पवृक्षजीवों को क्या-क्या प्रदत्त करते हैं ?

उ. तूर्यांग जाति के कल्पवृक्ष उत्तमवीणा, पटु, पटह, मृदंग, झालर, शंख, दुंदुभि, भंभा, भेरी और काहल इत्यादि भिन्न-भिन्न प्रकार के वाद्यों को देते हैं।

प्र. 27 भोग-भूमि में भूषणांग जातिज कल्पवृक्ष मनुष्यों को कौन-कौन से आभूषण प्रदान करते हैं ?

उ. भोग-भूमि में भूषणांग जातिज कल्पवृक्ष कंकण, कटिसूत्र, हार, केयूर, मंजीर, कटक, कुण्डल, किरीट और मुकुट इत्यादिक आभूषण प्रदान करते हैं।

प्र. 28 भोग भूमिज वस्त्रांग नामक कल्पवृक्ष कैसे-कैसे वस्त्रों को फलते हैं ?

उ. भोग भूमिज वस्त्रांग नामक कल्पवृक्ष नित्य ही उत्तम क्षौमादि वस्त्र तथा अन्य मन और नयनों को आनन्दित करने वाले नाना प्रकार के वस्त्रादि फलते हैं।

प्र. 29 भोग-भूमिज भोजनांग नामक कल्पवृक्ष मनुष्यों के लिए कौन-कौन से स्वादिष्ट मधुर भोज्य फलते हैं ?

उ. भोग-भूमि में भोजनांग कल्पवृक्ष सोलह प्रकार का आहार, सोलह प्रकार के व्यंजन, चौदह प्रकार के सूप (दालादिक), एक सौ आठ प्रकार के खाद्य पदार्थ, तीन सौ त्रेसठ प्रकार के स्वाद्य-पदार्थ और त्रेसठ प्रकार के स्वादिष्ट रस दिया करते हैं।

प्र. 30 भोग-भूमि में आलयांग नामक कल्पवृक्ष जीवों को क्या फल देते हैं ?

उ. भोग-भूमि में आलयांग कल्पवृक्ष स्वस्तिक और नन्द्यावर्त नामक सोलह प्रकार के रमणीय दिव्य भवन दिया करते हैं।

प्र. 31 भोग-भूमि में दीपांग नामक कल्पवृक्ष जीवों को क्या फल देते हैं ?

उ. भोग-भूमि में दीपांग नामक कल्पवृक्ष प्रासादों (भवनों) में शाखा, प्रवाल (नवजात पत्र) फल, फूल और अंकुरादि के द्वारा जलते हुए दीपकों के समान दिव्य ज्योतिर्मय प्रकाश देते हैं।

प्र. 32 भोग-भूमिज भाजनांग जाति के कल्पवृक्ष मनुष्यों को क्या-क्या प्रदान करते हैं ?

उ. भोगभूमिज भाजनांग जाति के कल्पवृक्ष मनुष्यों के लिए सुवर्ण एवं बहुत-से रत्नों से निर्मित धवल झारी, कलश, गागर, चामर और आसनादिक प्रदान करते हैं।

प्र. 33 भोग-भूमिज मालांग जाति के कल्पवृक्ष जीवों को क्या-क्या अर्पण करते हैं ?

उ. भोग-भूमिज मालांग जाति के कल्पवृक्ष जीवों को बल्ली तरु, गुच्छ और लताओं से उत्पन्न हुए सोलह हजार भेद रूप पुष्पों की विविध मालाओं को अर्पण करते हैं।

प्र. 34 भोग-भूमि में तेजांग नामक कल्पवृक्ष मनुष्यों के किस तरह उपकारक बनते हैं ?

उ. भोग-भूमि में तेजांग नामक कल्पवृक्ष मनुष्यों को मध्यदिन के करोड़ों सूर्यों की किरणों के समान होते हुए नक्षत्र, चन्द्र और सूर्यादिक की कान्ति को हरते (संहरण करते) हैं।

प्र. 35 भोगभूमिज जीवों की जन्म और मरण सम्बन्धी क्या विशेषता है ?

उ. भोगभूमि में जीव जुड़वा रूप जन्म लेते हैं, संतति को जन्मने वाले जन्म दाता पुरुष का छींक आते ही और स्त्री का जंभाई आते ही बिना किसी कष्ट हुए मरण हो जाता है और उन माता-पिता का शरीर शरद ऋतु के बादलों की तरह शुभ्र आकाश में विलय को प्राप्त हो जाता है।

प्र. 36 जन्म प्राप्त भोगभूमिज जुड़वा मनुष्यों का शरीर किस तरह वृद्धिंगत होता है ?

उ. जन्म प्राप्त जघन्य भोगभूमिज जुड़वा मनुष्य शय्या पर सोते-जागते हुये सात दिनों तक सानन्दित अमृतमय अपना अंगूठा चूसते हैं, फिर सात दिनों तक घुटने के बल चलते हैं, फिर तीसरे सप्ताह में मीठी-मीठी तोतली-सम भाषा बोलते हैं, फिर चौथे सप्ताह में पैरों को जमाकर स्वत: चलने लग जाते हैं, फिर पाँचवे सप्ताह में वे कला और रूप आदि गुणों से सम्पन्न हो जाते हैं, फिर छठे सप्ताह में वे

नवयौवन से सहित हो जाते हैं और सातवें सप्ताह में वे सम्यग्दर्शन प्राप्त करने की योग्यता भी पा लेते हैं।

प्र. 37 भोगभूमिज जुड़वा पुरुष और स्त्री कैसा जीवन जीते हैं ?

उ. भोगभूमिज जुड़वा पुरुष और स्त्री दम्पत्ति (पति-पत्नी) रूप बनकर विषय सुखमय जीवन जीते हैं।

प्र. 38 भोग-भूमि का सुख किससे भी अधिक होता है ?

उ. भोग-भूमि का सुख चक्रवर्ती के सुख से भी अधिक होता है।

प्र. 39 भोग-भूमि में कौन-सी बाधाएँ नहीं होती ?

उ. भोग-भूमि में विकलत्रय जीव, सर्प, बिच्छू आदि विषैले जन्तु, विषम ऋतु, बुढ़ापा, रोग, विशेष निद्रा और चिन्तादि बाधाएँ नहीं होती।

प्र. 40 भोग-भूमि में कौन-कौन से विशेष पाप नहीं होते ?

उ. भोगभूमि में लड़ाई-झगड़े, युद्ध, असत्य, चोरी, अन्याय, परस्त्रीसेवन और परिग्रह संग्रह आदि रूप पाप कदापि नहीं होते। [शेष वर्णन करणानुयोग में देखें]

प्र. 41 शलाका पुरुष किन्हें कहते हैं ?

उ. लोक प्रसिद्ध भव्य पुरुष जो तीर्थंकर, चक्रवर्ती आदिक पद के धारक होते हैं उन्हें शलाका पुरुष कहते हैं।

प्र. 42 शलाका पुरुष कब कौन-कौन-से कितने-कितने होते हैं ?

उ. शलाका पुरुष प्रत्येक कल्पकाल में 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलभद्र (बलदेव), 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण रूप 63 होते हैं।

प्र. 43 शलाका पुरुषों का अन्य तरह से महापुरुषों के रूप में कथन आगम में किस तरह से वर्णित किया गया है ?

उ. शलाका पुरुषों का अन्य तरह से महापुरुषों के रूप में 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण, 9 नारद, 11 रुद्र, 24 कामदेव, तीर्थंकरों के जन्म गुरु रूप 24 पिता, 24 माता, और 14 कुलकर इस तरह 169 महापुरुष के रूप में शलाका पुरुष वर्णित किये गये हैं।

प्र. 44 कुलकर अथवा मनु या आदिपुरुष किन्हें कहते हैं ?

उ. पुरुषों को कुल की भांति इकट्ठे रहने का उपदेश देने से भव्यपुरुष कुलकर कहलाते हैं अथवा वे अवधिज्ञान व जाति स्मरण द्वारा प्रजा के जीवन-जीने का उपाय जानने से वे मनु कहलाते हैं और वे युग के आदि में उत्पन्न होने से आदि पुरुष भी कहलाते हैं।

प्र. 45 शलाका पुरुषों का मोक्ष-प्राप्ति सम्बन्धी आगमिक नियम क्या है ?

उ. तीर्थंकर, उनके गुरु (पिता-माता), चक्रवर्ती, बलदेव, नारायण, रुद्र, नारद, कामदेव और कुलकर ये सब (प्रतिनारायण को छोड़कर 160 दिव्य पुरुष) भव्य होते हुए नियम से (उसी भव में या अगले 1, 2 भवों में) सिद्ध होते हैं- मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

प्र. 46 शलाका पुरुषों का परस्पर मिलाप सम्बन्धी आगम में क्या कथन है ?

उ. त्रिलोक में कभी चक्रवर्ती-चक्रवर्तियों का, तीर्थंकर-तीर्थंकरों का, बलभद्र-बलभद्रों का, नारायण-नारायणों का और प्रतिनारायण-प्रतिनारायणों का परस्पर मिलाप नहीं होता। नारायण-नारायण के निकट पहुँचेगा तो परस्पर दूरस्थ चिह्न- जैसे शंख के शब्द सुनने, रथों की ध्वजाओं के देखने मात्र से साक्षात्कार हो सकेगा।

प्र. 47 शलाका पुरुषों के शरीर सम्बन्धी क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं ?

उ. सभी शलाका पुरुष वज्रवृषभनाराच संहनन से सहित, सुवर्ण के समान वर्ण वाले (तिलोयपणण्ती में यह विशेष कथन है), उत्तमशरीर के धारक, सम्पूर्ण सुलक्षणों से युक्त और समचतुरस्र रूप संस्थान युक्त शरीर वाले होते हैं।

प्र. 48 तीनों लोकों के जीवों के शरीर में मूँछ-दाढ़ी के केशों सम्बन्धी क्या विशेषता होती है ?

उ. सर्व देव, नारकी, बलदेव, चक्रवर्ती, तीर्थंकर नारायण और कामदेव मूँछ-दाढ़ी के केश रहित होते हैं। (यही विशेषता भोगभूमि के मनुष्य एवं कुलकरों के शरीर में भी होना चाहिए।)

प्र. 49 शलाका पुरुषों में वर्णित कुलकरों के नाम कौन-से हैं ?

उ. 1. प्रतिश्रुति, 2. सन्मति, 3. क्षेमंकर, 4. क्षेमंधर, 5. सीमंकर, 6. सीमंधर, 7. विमलवाहन, 8. चक्षुष्मान्, 9. यशस्वी, 10. अभिचन्द्र, 11. चन्द्राभ, 12. मरुद्देव, 13. प्रसेनजित और 14. नाभिराय।

प्र. 50 तीर्थंकरों ऋषभदेव और चक्रवर्ती भरत भी कुलकरों में सम्मिलित किये जाते हैं क्या ?

उ. हाँ! महापुराण में तीर्थंकर ऋषभदेव और चक्रवर्ती भरत के लिए कुलकरों सम्मिलित कर कुलकरों की सोलह संख्या बतलायी है।

प्र. 51 इस कर्म भूमि (पंचमकाल) के कितने वर्ष शेष रहने पर इन कुलकरों की उत्पत्ति प्रारम्भ हो जाती है ?

उ. इस कर्मभूमि रूपी पंचम काल के एक हजार वर्ष शेष रहने पर इन कुलकरों की उत्पत्ति प्रारम्भ हो जाती है।

प्र. 52 प्रतिश्रुति नामक प्रथम कुलकर ने तात्कालिक किस परिस्थिति को देखकर भोगभूमि के मनुष्यों को क्या उपदेश दिया ?

उ. प्रतिश्रुति नामक प्रथम कुलकर ने चन्द्र सूर्य के दिखने लग जाने से भयभीत मनुष्यों को यह उपदेश दिया कि अब तेजांगजाति के कल्पवृक्षों की कमी आ चुकी है अत: पूर्व से ही अस्तित्व में रहने वाले सूर्य चन्द्र अब दिखने में आने लगे हैं इस प्रकार परिचय देकर उनका भय दूर किया और हठाग्रह रूप अपराध करने वाले मनुष्यों के लिए 'हा' रूप दण्ड का विधान निश्चित किया।

प्र. 53 सन्मति नामक द्वितीय कुलकर ने तात्कालिक कौन-सी परिस्थिति को देखकर वहाँ रहने वाले मनुष्यों के लिए क्या उपदेश दिया ?

उ. सन्मति नामक द्वितीय कुलकर ने तेजांगजाति के कल्पवृक्षों के लोप हो जाने पर अंधकार और तारागण के दिखने पर उन्हें अंधकार और ताराओं का परिचय देकर भय दूर किया।

प्र. 54 क्षेमंकर नामक तृतीय कुलकर ने भोग-भूमि की परिस्थिति बदलने पर लोगों को क्या शिक्षा दी ?

उ. क्षेमंकर नामक तृतीय कुलकर ने भोगभूमि में व्याघ्रादि तिर्यंचों में क्रूरता नजर आने पर भयभीत हुए लोगों के लिए यह उपदेश दिया कि इन क्रूर तिर्यंचों से अपना बचाव करना चाहिए, और बताया कि कल्पवृक्षों का अंत होने वाला है और दुखमय पंचमकाल निकट आने के कारण तिर्यंचों में क्रूरता दिखने लगी है, इनसे अपनी रक्षा का उपाय करना चाहिए, गृहादिक की विशेष सुरक्षा रखना चाहिए एवं गाय आदि पशु पालन व रक्षा की शिक्षा दी।

प्र. 55 क्षेमंकर नामक चतुर्थ कुलकर ने मनुष्यों को जीवन रक्षणार्थ कौन-से उपाय बतलाये ?

उ. क्षेमंकर नामक चतुर्थकुलकर ने व्याघ्रादि द्वारा मनुष्यों का भक्षण किये जाने पर अपने जीवन के रक्षणार्थ दण्ड (डण्डा) आदिक की प्रयोग विधि के उपाय बतलाये।

प्र. 56 सीमंकर नामक पंचम कुलकर ने विवादों से बचने का क्या उपाय बतलाया ?

उ. सीमंकर नामक पंचम कुलकर ने कल्पवृक्षों की कमी के कारण उनके स्वामित्व पर परस्पर में झगड़ा देखकर मनुष्यों के लिए कल्पवृक्षों की सीमा का विभाजन किया।

प्र. 57 सीमंधर नामक छठे कुलकर ने मनुष्यों में होने वाले परस्पर कलह की स्थिति में किस तरह की व्यवस्था स्थापित की ?

उ. सीमंधर शुभनाम वाले छठे कुलकर ने कल्पवृक्षों की अत्यन्त हानि के कारण मनुष्यों में परस्पर होने वाली कलह की वृद्धि को देखकर 'हा' (आश्चर्यकारक शब्द), 'मा' (निषेध कारक शब्द) रूप दण्ड विधान को निश्चित कर वृक्षों को चिह्नित करके उनके स्वामित्व का विभाजन किया।

प्र. 58 विमलवाहन नामक सातवें कुलकर ने मनुष्यों को होने वाली बाधाओं को देखकर कौन-सी शिक्षा दी ?

उ. विमलवाहन नामक सातवें कुलकर ने मनुष्यों के गमनागमन में बाधक कारणों को जानकर अश्वारोहण व गजारोहण की शिक्षा तथा वाहनों के प्रयोग की शिक्षा दी।

प्र. 59 चक्षुष्मान् नामक आठवें कुलकर ने संतान के दर्शन से भयभीत लोगों के लिए क्या उपदेश दिया ?

उ. चक्षुष्मान नामक आठवें कुलकर ने संतान के दर्शन से भयभीत लोगों के लिए यह उपदेश दिया कि अभी तक संतान का मुख देखने से पूर्व ही माता-पिता का देहान्त हो जाता था लेकिन अब सन्तानों के जन्मोपरान्त उनका मुख देखकर उनका मरण होगा।

प्र. 60 यशस्वी नामक नौवें कुलकर ने संतानों के लक्षणों से सम्बन्धित क्या शिक्षा प्रदान की ?

उ. यशस्वी नामक नौवें कुलकर ने संतानों के लक्षणों को देखकर उनका नामकरण करके ही अब माता-पिता का देहान्त होगा अत: उनके नामकरण के विधि-विधान की शिक्षा दी।

प्र. 61 अभिचन्द्र नामक दसवें कुलकर ने बालकों के समय उन्होंने बालकों को कौन-सी कला

सिखलाने का उपदेश दिया ?

उ. अभिचन्द्र नामक दसवें कुलकर ने बालकों के लिए माता-पिता के द्वारा बोलने और क्रीड़ा करने की शिक्षा-कला सिखलाने का उपदेश दिया।

प्र. 62 चन्द्राभ नामक ग्यारहवें कुलकर ने पुत्र-कलत्र के साथ दीर्घ काल तक जीवित रहने लगने वाले मनुष्यों के लिए विशेष कलह और शीतवायु के प्रकोप से बचने हेतु क्या शिक्षा रूप उपाय बतलाए ?

उ. चन्द्राभ नामक ग्यारहवें कुलकर ने पारिवारिक दीर्घजीवन में होने वाले विशेष कलह की स्थिति में 'हा', 'मा', 'धिक्' (धिक्कार हो) शब्दोच्चारण रूप दण्ड-विधान निश्चित किया तथा सूर्य की किरणों से शीत निवारण की शिक्षा दी।

प्र. 63 मरुद्देव नामक बारहवें कुलकर ने भोगभूमि के अवसान काल में प्राकृतिक वातावरण के परिवर्तन के समय लोगों को कौन-सी शिक्षा दी ?

उ. मरुद्देव नामक बारहवें कुलकर ने तात्कालिक प्रकृति में बदलाव रूप मेघ, वर्षा, बिजली, नदी व पर्वत आदि के दर्शन होने पर जन संतुष्टि हेतु नौका व छातों की प्रयोग-विधि तथा पर्वत पर सीढ़ियाँ बनाने की शिक्षा दी।

प्र. 64 प्रसेनजित नामक तेरहवें कुलकर ने सन्तानों सम्बन्धी क्या शिक्षा दी ?

उ. प्रसेनजित नामक तेरहवें कुलकर ने सन्तानों के जन्म पर जरायु की उत्पत्ति देखकर जरायु के दूर करने के उपाय की शिक्षा दी।

प्र. 65 नाभिराय नामक चौदहवें कुलकर ने नाभि से सम्बन्धित एवं कल्पवृक्षों के अभाव में औषधादि के प्रयोग सम्बन्धी क्या शिक्षा दी ?

उ. नाभिराय नामक चौदहवें कुलकर ने सन्तानों की नाभिनाल को अत्यन्त लम्बा होते देखकर नाभिनाल को काटने के उपाय की शिक्षा दी और औषधियों व धान्य आदि की पहचान का ज्ञान कराया तथा उनके दूध आदि के प्रयोग करने की शिक्षा दी।

प्र. 66 ऋषभदेव नामक पंद्रहवें कुलकर ने स्व जात धान्यादि में हानि देखकर मनुष्यों को कौन-कौन-सी शिक्षायें प्रदान कीं ?

उ. ऋषभदेव नामक पंद्रहवें कुलकर (प्रथम तीर्थंकर) ने एक ही प्रकार के स्वजात धान्यादि में हानि देखने पर कृषि, असि, मसि, शिल्प, वाणिज्य और विद्या रूपी षट् कर्मों या षट् विद्याओं की मनुष्यों के लिए शिक्षाएँ प्रदान कीं।

प्र. 67 भरत नामक सोलहवें कुलकर ने कुछ मनुष्यों में अविवेक की उत्पत्ति होने पर किस व्यवस्था की स्थापना की ?

उ. भरत नामक सोलहवें कुलकर (प्रथम चक्रवर्ती) ने कुछ मनुष्यों में अविवेक की उत्पत्ति होने पर वर्ण व्यवस्था की स्थापना की।

प्र. 68 प्रतिश्रुति नामक प्रथम कुलकर से लेकर नाभिराय पर्यंत चौदह कुलकरों का पूर्व-भव कौन-सा था ?

उ. प्रतिश्रुति से लेकर नाभिराय पर्यंत वे चौदह कुलकर पूर्व-भव में विदेह क्षेत्र के भीतर महाकुल में राजकुमार थे।

प्र. 69 भोगभूमि में उत्पन्न होने वाले कुलकरों का पूर्व-भव में संयम, तप आदि सम्बन्धी नियम क्या है ?

उ. वे सभी चौदह कुलकर संयम, तप और ज्ञान से युक्त पात्रों के लिए दानादिक देने में कुशल, अपने योग्य अनुष्ठान से युक्त और आर्जव, मार्दव गुणों से सहित होते हुए पूर्व में मिथ्यात्व भावना से भोगभूमि की आयु को बाँधकर पश्चात् जिनेन्द्र भगवान के चरणों के समीप क्षायिक-सम्यक्त्व को ग्रहण करते हैं।

प्र. 70 मनुष्य-भव से आकर कुलकर होने का नियम ऋषभ देव एवं भरत के जीवन पर लागू नहीं होता क्योंकि वे विमानवासी देव पर्याय से आकर मनुष्य रूप में जन्में थे फिर भी उन्हें कुलकर क्यों माना ?

उ. ऐसा नियम है कि चौदह कुलकर पूर्वजन्म में मिथ्यात्व के साथ ही मनुष्य आयु का बंध कर फिर सम्यक्त्व ग्रहण कर भोगभूमि में कुलकर के रूप में उत्पन्न होते हैं, लेकिन ऋषभदेव और भरत विमानवासी देवों के सर्वार्थसिद्धि विमान से सम्यक्त्व के साथ मनुष्य आयु का बंध कर कर्मभूमि में जन्म लेने अवतरित हुए थे और तृतीयकाल के अंत में कर्मभूमि का वातावरण प्रारम्भ हो गया था फिर भी उन्हें कृषि आदि षट् कर्मों और वर्णादिक की व्यवस्था स्थापित करने वाले कहे जाने से कुलकर औपचारिक रूप कहा जाता है।

प्र. 71 प्रतिश्रुति से लेकर नाभिराय तक चौदह कुलकर स्वीकार करने पर क्या विशिष्टता और अधिक रूप से सोलह कुलकर स्वीकार करने पर क्या बाधा उत्पन्न होगी ?

उ. प्रतिश्रुति से लेकर नाभिराय तक चौदह कुलकर स्वीकार करने पर 169 महापुरुषों की संख्या सुरक्षित रहेगी अन्यथा तीर्थंकर ऋषभदेव और चक्रवर्ती भरत को कुलकर मानने पर महापुरुषों की संख्या 171 मानना पड़ेगी तथा मनुष्य गति से मनुष्य आयु का बंध करके कुलकर बनते हैं यह नियम बाधक बनेगा।

प्र. 72 भोगभूमि के जीव मरणोपरान्त कौन-सी गति को प्राप्त करते हैं ?

उ. भोगभूमि के जीव अगर मिथ्यात्व के साथ मरण को प्राप्त होते हैं तो भवनवासी, व्यंतर और ज्योतिष्क देव रूप किसी एक पर्याय में भवनत्रिक नामक देवगति को प्राप्त करते हैं तथा भोगभूमि के जीव अगर सम्यक्त्व के साथ मरण को प्राप्त होते हैं तो सौधर्म-ऐशान कल्प में जाकर विमानवासी रूप देवगति को प्राप्त करते हैं।

प्र. 73 भोगभूमि के अंत में क्षायिक-सम्यक्त्व के साथ जन्म लेने वाले चौदह कुलकर मरण को प्राप्तकर कहाँ जन्म-धारण करते हैं ?

उ. भोगभूमि के अंत में क्षायिक-सम्यक्त्व के साथ जन्म लेने वाले चौदह कुलकर मरण को प्राप्त कर

विमानवासी देवों में ऋद्धि आदिक से सम्पन्न विशिष्ट देव पद धारण करते हैं और वहाँ से चयकर सुयोग्य मनुष्य-भव पाकर संयम धारण कर निर्वाण को प्राप्त करते हैं।

प्र. 74 तीर्थंकर ऋषभदेव और चक्रवर्ती भरत ये कर्मभूमि के मनुष्य थे इसके लिए आगमिक सटीक तर्क कौन-सा है ?

उ. निश्चित रूप से देवगति को प्राप्त करने वाले भोगभूमि के जीव उस ही भव में अर्थात् भोगभूमि में संयम धारण एवं मोक्ष पद पाने की योग्यता धारक नहीं होते जबकि तृतीयकाल के अन्त में जन्म लेने वाले प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव एवं प्रथम चक्रवर्ती भरत संख्यात वर्ष की आयु वाले होते हुए षट्कर्मों की व्यवस्था बतलाने वाले तथा चार पुरुषार्थों के उपदेशक होते हुए तद्भव मोक्षगामी थे अत: उन्हें कर्मभूमिज मानव कहा जाता है।

प. 75 पुरुषार्थ का वास्तविक शाब्दिक अर्थ क्या है ?

उ. पुरुषार्थ का वास्तविक शब्दिक अर्थ ''पुरुष'' के द्वारा किया जाने वाला 'अर्थ' अर्थात् प्रयोजनीय कार्य है।

प. 76 पुरुषार्थ के वे प्रयोजनीय रूप कार्य कौन-से हैं ?

उ. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप चार तरह के पुरुषार्थ ही प्रयोजनीय कार्य कहलाते हैं।

प्र. 77 धर्म-पुरुषार्थ में कौन-कौन-से प्रमुख कार्य समाहित किये जाते हैं ?

उ. 1. समीचीन जिनधर्म के आयतनों का निर्माण व उनका संरक्षण, संवर्द्धन।

2. समीचीन धर्मक्षेत्रों हेतु यात्राएँ व उनका प्रबन्धन।

3. पञ्चकल्याणकों वा जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा का समायोजन।

4. कल्पद्रुम जैसे- महामण्डल आराधना रूप विधानों का आयोजन।

5. जिनागम का संरक्षण व संवर्द्धन। और

6. मुनि, आर्यिकादि रूप आचार्य संघों की आहार, विहार और निहार आदिक की व्यवस्था के साथ उनको होने वाली बाधाओं का निवारण आदिक विशेष कार्य विशिष्ट पुरुषार्थी पुरुषों द्वारा किये जाने के कारण धर्म-पुरुषार्थ कहे जाते हैं।

प्र. 78 अर्थ-पुरुषार्थ को पुरुष किस रूप सम्पन्न करता है ?

उ. अर्थ-पुरुषार्थ में संलग्न पुरुष गृहणी सम भयभीत व सलज्ज न होता हुआ, न ही राज्य के नियमों का उल्लंघन करता हुआ, दिन रात प्रयत्नशील रहता हुआ देश-विदेश, देश प्रमुखों के समक्ष चोर व जंगली पशुओं (सिंहादिक) के आगे शूरवीर बनता हुआ भूख, प्यास और मानापमानादि की बाधाओं को सहता हुआ अर्थ या धन-अर्जन के कार्य को सम्पन्न करता है।

प्र. 79 काम-पुरुषार्थ को पुरुष कैसे सार्थक बनाता है ?

उ. जो अपने धार्मिक कुल के संस्कार की परम्परा की वृद्धि करने के निमित्त स्वयं के पूर्वज, माता-पिता और अग्रज आदिक की आज्ञा व अनुमति तथा उनकी संतुष्टि के बल पर अपने कुल आदिक की परम्परा, राज्य तथा स्वगुणों के अनुरूप, विनीत, गुणवान, सुयोग्य कन्या को स्वीकार कर जीवन पर्यन्त

विवाह के संकल्पों से संकल्पित होता हुआ सन्तान उत्पत्ति का पुरुषार्थ करता है वह पुरुष काम-पुरुषार्थ की सार्थकता को प्राप्त करता है।

प्र. 80 मोक्ष-पुरुषार्थ को सार्थक बनाने वाला पुरुष कैसा होता है ?

उ. मोक्ष-पुरुषार्थ को सार्थक बनाने हेतु जो पुरुष एकत्व (अकेलेपन), अन्यत्व (स्वात्मा से सर्व पदार्थ भिन्न हैं) की भावना को प्रमुख बनाता हुआ गृह के मोह-जाल को छोड़ मुनि बन व मुनि संघ में समर्पित होकर निर्ग्रन्थ दीक्षा धारण कर मुनियों के मूलगुणों के साथ द्वादश तपादिक आचारों का पालन करता हुआ सिंह के सदृश निर्भय, निर्द्वन्द होकर जंगल, उपवन नगर व ग्रामादिक में सम्यक्-ध्यान के द्वारा कर्मों की निर्जरा करता है वह पुरुष मोक्ष-पुरुषार्थ को सार्थक बनाने वाला होता है।

प्र. 81 पुरुषार्थों को करने में केवल पुरुष के लिए ही सुयोग्य माना है ऐसा क्यों ?

उ. केवल पुरुष अत्यन्त निर्भीक, निर्द्वन्द, निर्लज्य, अकायर होता हुए एकलपन के साथ बुलंदतापूर्वक बेझिझक विशिष्ट शक्तिवान उद्यमी कहलाता हुआ त्याग और वैराग्य से उत्कृष्ट ध्यान में भी अपनी आत्मा को उन्नति की सर्वोच्चता तक पहुँचाता है न कि कोई गृहणी इस पुरुषार्थ की सिद्धि को पाती है, अत: उसे पुरुष के अर्थ अर्थात् प्रयोजनीय कार्य के करनेवाले पुरुष को ही चारों पुरुषार्थों के करने हेतु सुयोग्य माना गया है।

प्र. 82 धर्म-पुरुषार्थ करने का फल क्या है ?

उ. धर्म-पुरुषार्थ करने का फल पुण्य की प्राप्ति है, जिस पुण्य के फलस्वरूप सांसारिक वैभव रूप सुगति, उत्तम जाति, उत्तम कुल, सांगोपांग शरीर, सुन्दर भोग, धन-धान्य, पुत्र पौत्रादि सम्पदा की प्राप्ति तथाहि वीतराग आयतन, उत्तम संहननादि की उपलब्धि से परम्परा से मोक्ष रूप फल की प्राप्ति माना गया है।

प्र. 83 अर्थ-पुरुषार्थ और काम पुरुषार्थ का फल क्या है ?

उ. अर्थ तथा काम-पुरुषार्थ का फल संसार वृद्धि या चतुर्गति भ्रमण है।

प्र. 84 मोक्ष-पुरुषार्थ का फल क्या है ?

उ. मोक्ष-पुरुषार्थ का फल सर्वकर्म का क्षय, भव भ्रमण का अंत और मोक्ष या सिद्ध-पद की प्राप्ति माना गया है।

प्र. 85 तीर्थंकर किन्हें कहते हैं जिन्होंने कि हमें पुरुषार्थों का उपदेश दिया था ?

उ. कल्याणकों की पूजा से लोक पूज्यता को प्राप्त जिन विशिष्ट आत्माओं से तीर्थ का उदय होता है उन्हें तीर्थंकर कहते हैं।

प्र. 86 तीर्थ किसे कहते हैं ?

उ. जो भव्य जीवों को संसार रूपी समुद्र से पार लगावे उसे तीर्थ कहते हैं।

प्र. 87 संसार रूपी भव-समुद्र से पार लगाने वाली वस्तु कौन-सी है ?

उ. संसार रूपी भव-समुद्र से पार लगाने वाली वस्तु तीर्थंकरों की कल्याण करने वाली वाणी है जिसे जिनवाणी, आगम या दिव्यध्वनि भी कहते हैं।

प्र. 88 तीर्थंकर कहाँ, कब कितनी संख्या में होते हैं ?

उ. पंच भरत पंच ऐरावत संबन्धी अवसर्पिणी के सुषमा-दुषमा नामक चतुर्थ काल में और उत्सर्पिणी के सुषमा-दुषमा नामक तृतीय काल में चौबीस-चौबीस तीर्थंकर उत्पन्न होते हैं।

प्र. 89 विदेह क्षेत्रों में कब और कितने तीर्थंकर होते हैं ?

उ. पंच महा विदेहों अथवा उनके अंदर स्थित एक सौ साठ उपविदेह क्षेत्रों में जहाँ सदा सुषमा-दुषमा नामक चतुर्थकाल जैसा वातावरण रहता है, वहाँ हमेशा अधिक से अधिक एक सौ साठ और कम-से-कम बीस तीर्थंकर विद्यमान रहते हैं।

प्र. 90 तीर्थंकर कौन और कैसे बनते हैं ?

उ. जो भव्य जीव सम्यक्त्व पूर्वक केवली-भगवान अथवा श्रुत-केवली मुनीश्वर के पाद-मूल में लोक-कल्याण की भावना के साथ षोडसकारण भावनाओं को भाते हैं। वे विशिष्ट विशुद्धि प्राप्त जीव तीर्थंकर प्रकृति का संचय कर तीर्थंकर बनते हैं।

प्र. 91 दुषमा-सुषमा नामक तृतीय काल के अन्त में तीर्थंकर की उत्पत्ति का कारण बतलाइये ?

उ. दुषमा-सुषमा नामक तृतीय काल के अन्त में प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ और प्रथम चक्रवर्ती भरत की उत्पत्ति होना यह हुण्डा-अवसर्पिणी काल का दोष माना गया है।

प्र. 92 भरत और ऐरावत क्षेत्रों में तीर्थंकरों के कल्याणक कितने होते हैं और कौन-कौन-से ?

उ. भरत और ऐरावत क्षेत्रों में तीर्थंकरों के गर्भ, जन्म, दीक्षा (तप या अभिनिष्क्रमण), केवलज्ञान और निर्वाण (मोक्ष) रूप पंच कल्याणक हुआ करते हैं।

प्र. 93 विदेह क्षेत्रों में कल्याणकों के होने का क्या विशेष नियम है ?

उ. विदेह क्षेत्रों में पञ्च कल्याणकों वाले तीर्थंकरों के अलावा दो या तीन कल्याणकों वाले तीर्थंकर भी हुआ करते हैं।

प्र. 94 विदेह क्षेत्रों में दो अथवा तीन कल्याणक कौन-कौन-से होते हैं ?

उ. विदेह क्षेत्रों में कोई गृहस्थश्रावक सोलह भावन-भाकर तीर्थंकर-प्रकृति का बंध कर निर्ग्रन्थ-दीक्षा-धारण करते समय तीर्थंकर-प्रकृति का उदय हो जाने से उनके दीक्षा-कल्याणक और आगे उसी जीवन में ज्ञान और मोक्ष-कल्याणक भी अवश्य सम्पन्न होते हैं। तथा जो गृहस्थ मुनि बनने के उपरान्त तीर्थंकर-प्रकृति का बंध करते हैं, उनके ज्ञान एवं मोक्ष-कल्याणक रूप दो कल्याणक सम्पन्न होते हैं। यह नियम केवल विदेह क्षेत्रों का है न कि भरत और ऐरावत क्षेत्रों का।

प्र. 95 विदेह क्षेत्र में एक या चार कल्याणक वाले तीर्थंकर क्यों नहीं होते ?

उ. इसका समाधान यह है कि जो जीव पूर्वभव से तीर्थंकर-प्रकृति का बंध करके आया है उस जीव के पांचों कल्याणक सम्पन्न होंगे और जो जीव पूर्व भव से तीर्थंकर-प्रकृति का बंध करके नहीं आया है उसे गर्भावस्था में तो तीर्थंकर-प्रकृति बंध तो होगा नहीं अत: गर्भ कल्याणक को छोड़कर चार कल्याणक होना संभव नहीं। इसी तीर्थंकर-प्रकृति का बंध किसी योग्य पुरुष के गृहस्थावस्था से मुनि

अवस्था तक ही होना संभव है केवली होने के बाद नहीं; कि जिस कारण उसके ज्ञान-कल्याणक भी छोड़कर मात्र मोक्ष-कल्याणक सम्पन्न हो सके। (विशेष विषय करणानुयोग में देखें)।

प्र. 96 भरतक्षेत्र में तीर्थंकरों का जन्म किस विशिष्ट स्थल पर होता है ?

उ. भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में तीर्थंकरों का जन्म; जिस स्थल की चित्रा भूमि पर ओम् (ॐ) शाश्वत रूप से बना हुआ है ऐसे स्थल पर रची जाने वाली अयोध्या नगरी में होता है।

प्र. 97 भरतक्षेत्र में तीर्थंकरों को निर्वाण (मोक्ष) की प्राप्ति किस पवित्र स्थल से होती है ?

उ. भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में तीर्थंकरों को निर्वाण (मोक्ष) की प्राप्ति; जिस स्थल की चित्राभूमि पर शाश्वत रूप से स्वस्तिक (卐) बना हुआ है ऐसे स्थल पर रचे जाने वाले सम्मेदशिखर-पर्वत से होती है। (प्रलययोपरान्त रचना रूप विशेष वर्णन करणानुयोग में देखें)।

प्र. 98 आर्यखण्ड किसे कहते हैं ?

उ. भरत-क्षेत्र में विजयार्ध पर्वत की दक्षिण दिशा की ओर गंगा और सिन्धु नदियों से विभाजित मध्य वाले भाग को जहाँ धार्मिक-क्रिया करने वाले गुणवान मनुष्य निवास करते हैं उसे आर्यखण्ड कहते हैं।

प्र. 99 म्लेच्छखण्ड किसे कहते हैं ?

उ. भरत क्षेत्र में विजयार्ध पर्वत की उत्तर दिशा की ओर गंगा और सिन्धु नदियों से विभाजित तीन भागों को तथा दक्षिण दिशा के दो भागों को अर्थात् षट्खण्डों में से पांच खण्डों को जहाँ कि धार्मिक क्रियाओं से रहित मनुष्य निवास करते हैं उसे म्लेच्छ खण्ड कहते हैं।

प्र. 100 भरत क्षेत्र में तीर्थंकरों का अयोध्या नगर को छोड़कर अन्य स्थलों पर जन्म होने में और सम्मेद-शिखर क्षेत्र के अलावा अन्य स्थल से मोक्ष होने में मुख्य कारण कौन-सा है ?

उ. तीर्थंकरों का अयोध्या नगर छोड़कर अन्य स्थलों पर जन्म और सम्मेदशिखर क्षेत्र छोड़कर अन्य स्थल से मोक्ष होने में मुख्य कारण असंख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल के अनन्तर आने वाला हुण्डा-अवसर्पिणी काल है जिस काल में ऐसी ही कुछ विचित्र घटनाएँ घटा करती हैं। (अतिरिक्त विषय देखो जैनागम संस्कार अ.2.)।

सौभाग्य से मिलता है संतों का सान्निध्य

- आचार्यश्री आर्जवसागरजी

अपने नित्य प्रवचन में कहा कि संत उसी नगर में वर्षायोग करते हैं, जहां के लोगों का महा पुण्य कर्म का उदय होता है। संतों का सान्निध्य भी सौभाग्य से मिलता है। इसलिए उनके सान्निध्य से अपने जीवन को पवित्र एवं संस्कारित बना लेना चाहिए। मुनिराज ने कहा कि शुद्धाहार के साथ ध्यान करने से मन के साथ-साथ हमारा तन भी स्वस्थ रहता है। इसीलिए भारतीय ध्यान पद्धति को दुनिया के सभी लोग स्वीकार रहे हैं। उन्होंने कहा कि ध्यान का निरंतर अभ्यास करने से प्रतिदिन नये-नये विचार उत्पन्न होते हैं व मन की शुद्धता निरंतर बढ़ती जाती है। धर्म निःस्वार्थ भाव से ही चल सकता है। धर्म धन व धन से रखे गये सेवकों मात्र से नहीं चलेगा। धर्म को आगे बढ़ाने के लिए प्रत्येक श्रद्धालु को अपने मन में साधु-संतों व भगवान के प्रति सच्ची निःस्वार्थ सेवा के साथ श्रद्धा जगानी चाहिए।

साभार : आर्जव-वाणी

सम्यग्ज्ञान-भूषण व सिद्धान्त-भूषण पदवी हेतु त्रैमासिक धार्मिक प्रश्न-पत्र

समय : 15 दिन | अंक : 100

❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं। ❖ सभी प्रश्नों के उत्तर लाइन वाले पेपर्स पर पेरा बनाकर लिखें। ❖ उत्तर राष्ट्र-भाषा हिन्दी में ही लिखें। ❖ उत्तर लिखकर काटे जाने या घिसे जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

प्र.1. आगम किसे कहते हैं?
प्र. 2. आगम के छह विशेषण कौन-से हैं?
प्र. 3. आगम के उपदेश में नयार्थ का अर्थ क्या है?
प्र. 4. आगम पद्धति किसे कहते हैं?
प्र. 5. शास्त्र अध्ययन व वीतराग की देशना का पात्र कौन है?
प्र. 6. धर्मोपदेष्टा के कौन-कौन-से गुण होते हैं?
प्र. 7. श्रोता का लक्षण क्या है?
प्र. 8. जिनवाणी में उपदेश की पद्धति को क्या कहते हैं?
प्र. 9. एक पुरुष या त्रेसठ शलाका पुरुषों का कथन किस अनुयोग में होता है?
प्र.10. त्रेसठ शलाका पुरुष कब उत्पन्न होते हैं?
प्र.11. जो भव्य जीवों को संसार पर लगावे उसे क्या कहते हैं?
प्र.12. पुरुषार्थ का वास्तविक शाब्दिक अर्थ क्या है?
प्र.13. काम-पुरुषार्थ को पुरुष कैसे सार्थक बनाता है?
प्र.14. मोक्ष पाने के लिए कौन-सा पुरुषार्थ किस तरह करना चाहिए?
प्र.15. ऋषभ देव तीर्थंकर ने मनुष्यों को कौन-कौन-सी शिक्षाएँ दीं?
प्र.16. कल्पवृक्ष का लक्षण क्या है?
प्र.17. कुलकर या मनु किन्हें कहते हैं?
प्र.18. शलाका पुरुषों का मोक्ष-प्राप्ति सम्बन्धी नियम क्या है?
प्र.19. भोग-भूमि के जीव मरणोपरान्त कौन-सी गति को प्राप्त करते हैं?
प्र.20. धर्म-पुरुषार्थ में कौन-कौन-से प्रमुख कार्य करना चाहिए?

आधार: आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित-**'आगम-अनुयोग'**, (प्रश्नोत्तर प्रदीप)

प्रश्न पत्र के पूर्व में दिये गये प्रश्नोत्तरों को पढ़कर उनका चिंतवन मंथन कर उत्तर पुस्तिका की पूर्ति करे।

परीक्षार्थी परिचय

नाम.. उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

पता ....

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु परीक्षार्थी के लिए नियमावली

1. उपर्युक्त पदवी हेतु परीक्षार्थी की उम्र कम-से-कम 13 वर्ष पूर्ण और अधिक से अधिक आंखों की दृष्टि और लेखनी के स्थिर रहने तक रहेगी।
2. परीक्षार्थी अवश्य रूप से सप्त-व्यसनों अथवा मद्य, मधु, मांस का त्यागी एवं तीर्थंकर व उनकी जिनवाणी का श्रद्धालु होना चाहिए।
3. जो महानुभाव भाव-विज्ञान पत्रिका के सदस्य हैं उन्हें परीक्षा सामग्री प्रश्नोत्तर रूप में भाव-विज्ञान पत्रिका के साथ संलग्न रूप से सतत रूप से चार वर्षों तक प्राप्त होती रहेगी।
4. चारों अनुयोगों के शास्त्रों सम्बन्धी क्रमश: प्राप्त होने वाले प्रश्नोत्तरों तथा अंत में दिये गये प्रश्न-पत्र को स्वयं पढ़कर हल करें और प्रेषित करें तथा अन्य जनों तक भी परीक्षा में भाग लेने की जानकारी अवश्य देने का पूर्ण प्रयास करें। (इस कार्य हेतु इंटरनेट का भी उपयोग कर सकते हैं।)
5. जो महानुभाव पत्रिका के सदस्य नहीं हैं उन्हें प्रश्नोत्तर रूप सामग्री प्राप्त करने हेतु डाक व्यय का भुगतान स्वत: करना होगा।
6. परीक्षार्थी के लिए यह आवश्यक होगा कि वे प्रश्नोत्तरी व प्रश्नपत्र पाते ही एक माह के अन्तर्गत साफ-सुथरे रजिस्टर के पेपर्स पर पूर्ण शुद्धता और विनयपूर्वक उत्तर लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजने का उपक्रम करें।
7. उत्तर पुस्तिका पर अंक (नम्बर) देने का भाव उत्तर-पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता और लिखावट आदि पर निर्भर करेगा।
8. परीक्षार्थी से ऑनलाइन या फोन द्वारा उत्तर पूछने की पहल भी की जा सकती है अत: अपने पते के साथ ई-मेल एड्रेस या मोबाईल/फोन नं. अवश्य लिखें।
9. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
10. परीक्षार्थी प्रश्नों के उत्तर स्वत: अपनी लिखावट में ही लिखें, अन्य किसी के नाम से उत्तर पुस्तिका भरकर प्रेषित किये जाने पर हमारे परीक्षा बोर्ड द्वारा उसे पदवी हेतु मान्य नहीं किया जावेगा।
11. कदाचित् किसी भव्य द्वारा किसी विशेष परिस्थिति में परीक्षा न दे सकने के कारण और उनके आग्रह किये जाने पर उन्हें प्रश्नोत्तरी व प्रश्नपत्र उपलब्ध कराये जाने की व्यवस्था परीक्षा-बोर्ड द्वारा की जा सकेगी।
12. सम्यग्ज्ञानभूषण एवं सिद्धांतभूषण पदवी सम्बन्धी उत्तीर्णता प्राप्त करने वाले भव्य गणों को भगवान महावीर आचरण संस्था समिति के द्वारा दो या चार वर्षों में प्रमाण पत्र सह सम्मानित किया जावेगा।
13. प्रश्नोत्तरी व प्रश्न-पत्र मंगवाने हेतु परीक्षा-बोर्ड के निम्न लिखित पदवीधारी से सम्पर्क करें:-

भाव-विज्ञान पत्रिका के	भ. महावीर आचरण संस्था	भ.महावीर आचरण संस्था
प्रधान सम्पादक	समिति के मंत्री	समिति के अध्यक्ष
डॉ. अजित जैन	श्री राजेन्द्र जैन	श्री महेन्द्र जैन
मो. 7222963457	मो. 7049004653	मो. 7999246837

14. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित करें:-
सम्पादक, भाव विज्ञान, एम आई-जी 8/4, गीतांजली कॉम्पलेक्स,
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल 462003 (म.प्र.)

गतांक से आगे

पारसचन्द से बने आर्जवसागर

–आर्यिकारत्न श्री प्रतिभामति माताजी

पश्चात् कुचामन सिटी के भक्तों के निवेदन से गुरुवर का विहार उसी ओर हुआ। एक शुभ दिन मंगलमय वाद्य ध्वनि और अपार जन समूह के साथ एवं महिलाओं ने मंगलकलश लेकर गुरुवर की मंगल आगवानी की। कुछ दिन बड़े मन्दिर में प्रवास रहा। प्रतिदिन गुरुवर का अमृतमय वाणी का लाभ लिया। एक दिन वहाँ पर चल रहे जैन स्कूल में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए प्रवचन हेतु बच्चे बाजे के साथ मुनिसंघ को ले गये। वहाँ पर हजारों बच्चों के बीच गुरुवर का मंगल प्रवचन सम्पन्न हुआ। पश्चात् दि. जैन वर्धमान जिन चैत्यालय डीडवाना रोड में 22.11.09 को संत शिरामणि परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के आचार्य पदारोहण दिवस के अवसर पर परम प्रभावक परम पूज्य मुनिवर 108 आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में श्री शान्तिविधान पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात मुनिवर के मंगल प्रवचन हुये। दोपहर में अत्यन्त उल्लास के साथ आचार्य पदारोहण दिवस को मनाने हेतु जुलूस के साथ मुनिवर ''श्री जिनेश्वर दास स्कूल'' परिसर पहुँचे। और वहाँ पर आचार्यश्री की पूजन, आरती की गयी। पश्चात् गुरुवर ने आचार्य गुरुवर का गुणगान किया। कुछ दिनों के उपरान्त गुरुवर का विहार हो गया। मीठड़ी गाँव होते हुए नाँवा पहुँचे। समाज के लोगों ने उत्साह पूर्वक गुरुवर की मंगल आगवानी की। प्रात: कालीन प्रवचन शृंखला में भी भक्तों ने लाभ लिया। यहाँ पर कुँए का पानी खारा होने के कारण गुरुवर को बुखार की शिकायत हो गयी फिर भी गुरुवर ने दैनिक चर्याओं में कोई कमी न करते हुए प्रसन्न चित्त के साथ उसे सहन किया। वरना ऐसी प्रभावना कैसे कर पाते हैं। कुछ दिनों के ठहराव के बाद स्वस्थ होकर गुरुवर ससंघ विहार करके लूणवाँ अतिशय क्षेत्र पहुँचे। जिनमन्दिर में प्राचीन प्रतिमाओं का दर्शन किया। किशनगढ़ रेनवाल कमेटी के लोगों ने आकर अपने नगर पधारने हेतु नम्र निवेदन श्रीफल भेंट से किया। पश्चात् देहली, भीण्डा होते हुए गुरुवर का ससंघ किशनगढ़ रेनवाल में बाजे एवं अपार जनसमूह के जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। गुरुवर के मंगल प्रवचन के दौरान समाज के लोगों ने शीतकालीन प्रवास हेतु श्रीफल भेंट किये। गुरुवर के मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा से श्री विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला की शुरुआत हुई। करीब 60-70 बच्चे प्रतिदिन शाम को 7 बजे से पाठशाला आ जाते थे। बच्चों के साथ बड़े लोग भी शाम की इस कक्षा में उत्साह से भाग लेते थे। बीस-पच्चीस दिनों के प्रवास के उपरान्त गुरुवर का विहार जोबनेर की ओर हुआ। रेनवाल के भक्तों ने तो गुरुवर को जाने से बहुत रोका और अश्रुपात करते हुए गुरुवर के साथ चलते रहे। जोबनेर के भक्तों ने गुरुवर की मंगल आगवानी हेतु आतुर रहे और बाजे के साथ केसरिया ध्वज लहराते हुए बड़ी धर्मप्रभावना के साथ गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ का मंगल प्रवेश जोबनेर में हुआ। प्रतिदिन प्रात: कालीन मंगल प्रवचन एवं दोहपर में स्वाध्याय व शाम को संस्कार कक्षा के माध्यम से धर्म प्रभावना हुई और यहाँ पर आ. विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला स्थापित की गई। 15-20 कन्यायें एवं महिलाएँ इस पाठशाला में पढ़ाने एवं प्रति रविवार पूजन करवाने इत्यादि रूप से संचालित करने के लिए तैयार हुईं। कुछ दिनों के प्रवास के पश्चात् गुरुवर मंगल विहार करते हुए हिंगोनियाँ होते

हुए चौमूं नगर पहुँचे। वहाँ के चार मन्दिरों के दर्शन करके दो-तीन दिनों में भी मुनिवर ने बड़ी प्रभावना करते हुए वहाँ से विहार विराट नगर से होते हुए अलवर नगर की ओर विहार किया।

अलवर नगर में अपार जनसमुदाय एवं वाद्य मंगल ध्वनियों के साथ गुरुवर आर्जवसागर जी का ससंघ वस्ती के श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर पहुँचे फिर दर्शन चर्या प्रवचन के उपरान्त पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, जैन भवन परिसर स्कीम-10 पर मंगल आगवानी हुई। प्रतिदिन श्रद्धालुगण ने गुरुवर के वाचनामृत का पान किया। और 1.3.10 को आ. विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला के मंगल कलश की स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। फाल्गुन अष्टाह्निका पर्व में श्री नन्दीश्वर महामण्डल विधान का आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें बहुत लोगों ने इन्द्र-इन्द्राणी बनकर देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति की। और अलवर में स्थित पंचायती बड़े मन्दिर का भी दर्शन किया। वहाँ पर की गई स्वर्णिम सूक्ष्म चित्रकला को देखकर गुरुवर ने उसकी प्रशंसा की। भारत के सभी मन्दिरों में ऐसे धार्मिक चित्र होना चाहिए। इसे देखकर बच्चे एवं बड़े लोगों को भी नैतिक शिक्षा एवं मोक्षमार्ग का ज्ञान प्राप्त होता है, ऐसा गुरुवर ने कहा। अलवर में स्थित और भी मन्दिरों का दर्शन गुरुवर ने किया। 20-25 दिनों के प्रवास के उपरान्त कमेटी के द्वारा और ठहरने हेतु नम्र निवेदन होते हुए भी गुरुवर का विहार अतिशय क्षेत्र तिजारा की ओर हो गया।

दिनाँक 15.03.10 को गुरुवर आर्जवसागर जी महाराज ससंघ का देहरा तिजारा अतिशय क्षेत्र में वाद्य ध्वनि व जय-जयकारों के साथ पाद प्रक्षालन, आरती करते हुए भव्य मंगल प्रवेश हुआ। कुछ दिनों के प्रवास में ही तिजारा जैन समाज गुरुवर से प्रभावित हो गई। और आ. विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला के कलश स्थापना का कार्यक्रम हुआ। समाज की कमेटी ने महावीर जयन्ती एवं मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज के दीक्षा दिवस कार्यक्रम मनाने हेतु श्रीफल भेंट कर नम्र निवेदन किया। गुरुवर का मंगल आशीर्वाद मिला।

दिनांक 28 मार्च 2010 को भगवान महावीर 2609 वीं जन्म जयन्ती व मुनि श्री आर्जवसागरजी महाराज के 22 वें दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गये। इस मंगल कार्यक्रम की शुरुआत प्रात: 5:00 बजे प्रभात फेरी नगर परिभ्रमण के साथ की गई। प्रभात फेरी में सम्पूर्ण तिजारा नगरी महावीर भगवान के जय जयकारों से गूंज उठी। इसके बाद प्रात: 8:30 बजे परम पूज्य मुनिवर का मंगल उद्‌बोधन हुआ। मुनिवर ने भगवान महावीर के जन्म कल्याण का इतना सजीव वर्णन किया कि सभी श्रोतागण भाव विभोर हो गए। प्रात: 10:30 बजे तिजारा के इतिहास में प्रथम बार महावीर जयन्ती के शुभावसर पर मुनिवर के सान्निध्य में स्वर्ण रथयात्रा निकाली गई, जिसमें विभिन्न नगरों के हजारों लोगों ने भाग लिया। रथयात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई वापिस देहरा क्षेत्र पर आई इसके पश्चात् श्री जी का अभिषेक मुनिवर के आशीर्वचन के साथ सम्पन्न हुआ। दोपहर 1 से 2:30 बजे तक विभिन्न स्थानों की धार्मिक पाठशालाओं का सम्मेलन धार्मिक प्रस्तुति के साथ मुनिवर के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस धार्मिक पाठशाला सम्मेलन के पारितोषिक में प्रथम स्थान सांगानेर ने, द्वितीय स्थान अलवर ने, एवं तृतीय स्थान तिजारा ने प्राप्त किया। सभी विद्यार्थियों को सांत्वना पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। विभिन्न पाठशालाओं के संरक्षकों एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं तथा समाज के गणमान्य अतिथिगणों को प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

अपराह्न 2:30 बजे मंचीय कार्यक्रम में क्षेत्र के पदाधिकारियों तथा बाहर से पधारे अतिथिगणों के द्वारा देवाधिदेव महावीर भगवान एवं आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र का अनावरण, दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। मुनिवर के दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर मुनिवर के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य दिल्ली वालों ने तथा शास्त्र भेंट करने सौभाग्य तिजारा धार्मिक पाठशाला की शिक्षिकाओं ने प्राप्त किया। आमंत्रित विद्वानों द्वारा भगवान महावीर पर उद्‌बोधन दिया गया। अलवर जैन समाज के सभी सदस्यगण व अन्य लोगों द्वारा मुनिश्री के चरणों में नारियल भेंट कर चातुर्मास के लिए निवेदन किया गया।

इसके बाद परम पूज्य मुनिवर ने भगवान महावीर के उपदेशों की चर्चा अपने मंगल प्रवचन में की। सायं 6:30 बजे गुरु भक्ति, भजन संध्या तथा श्रीजी एवं मुनिवर की आरती का पालना झुलाया गया तथा धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इस कार्यक्रम में भोपाल, जयपुर, दमोह, अलवर एवं देहली इत्यादि अनेक स्थलों से करीब 500 लोगों ने पधारकर इस सम्मेलन में ज्ञानार्जन किया। इस तरह यह कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ। कुछ दिनों के बाद गुरुवर का मंगल विहार हरियाणा प्रदेश के रेवाड़ी नगर की ओर हो गया। रेवाड़ी नगर में गुरुवर की मंगल आगवानी वाद्य ध्वनियों से हुई। वहाँ की कमेटी के लोगों ने ग्रीष्मकालीन वाचना हेतु नम्र निवेदन किया। ग्रीष्मकाल के कुछ दिन के प्रवास में प्रवचन एवं कक्षायें चलीं और धार्मिक संस्कार देने वाली धार्मिक पाठशाला का कलश स्थापना पूर्वक प्रारम्भ किया गया। रेवाड़ी नगर की 250 घर की समाज वहाँ पर 5 विद्यालय चलाती है जिसमें जैन व अजैनी के करीब 5000 बच्चे पढ़ते हैं। वहाँ पर उनको धार्मिक कक्षा के माध्यम से जैन धर्म भी सिखाया जाता है। गुरुवर को स्कूल में प्रवचन हेतु निवेदन किया गया। दिनांक 20 अप्रैल को रेवाड़ी पब्लिक स्कूल में गुरुवर के आगमन पर स्कूल के विद्यार्थियों ने बैण्ड की धुन पर, प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ उनकी आगवानी की। प्रबंधन समिति के प्रधान डी.के. जैन व सचिव दीपक जैन, प्रबंधक राजीव जैन सलाहकार, रमेश जैन जयमाला जैन, मुख्याध्यापिका डॉ. इन्दु यादव, जैन समाज के प्रधान अजित प्रसाद जैन, सचिव राजकुमार जैन, जैन एजुकेशन बोर्ड के प्रधान सुभाष जैन, सचिव डॉ. एस.सी. जैन आदि ने मुनिश्री आर्जवसागर जी के चरणों में श्रीफल भेंट किये। समिति के सचिव दीपक जैन ने मुनिवर का स्वागत करते हुए उनका परिचय दिया। विद्यालय की बालिकाओं ने गुरुवंदना से मुनिश्री का अभिवादन किया। जैन स्कूल कमेटी के पदाधिकारीगण के द्वारा मुनिश्री को शास्त्र भेंट किया गया। पश्चात् गुरुवर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उनको शाकाहारी बनने, तंबाकू व नशीले पदार्थों का सेवन न करने तथा चमड़े का प्रयोग न करने का संकल्प हाथ उठाकर दिलाया। और मुनिश्री ने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा **कि किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनुशासन का पालन करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल आजीविका प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। अपितु इसके माध्यम से आचरण सीखकर हम सर्वोच्च पदों पर पहुँचें और देश की सेवा करें यह उद्देश्य होना चाहिए।** अजेश जैन के संचालन में चले कार्यक्रम में अंत में मुख्याध्यापिका ने आभार व्यक्त किया। पश्चात् कुछ दिनों के बाद गुरुवर का मंगल विहार भारत की राजधानी दिल्ली की ओर हो गया। धारूहेड़ा, अष्टापद, सिद्धान्त तीर्थ गुड़गाँव आदि से होते हुए गुरुवर का मंगल प्रवेश दिल्ली महानगर में हुआ। महरोली (अहिंसा स्थल) स्थित

महावीर भगवान का दर्शन कर आहारचर्या सम्पन्न हुई। दोपहर ग्रीनपार्क से पधारे कमेटी के लोगों ने अपनी कॉलोनी में पधारने हेतु नम्र निवेदन किया। गुरुवर का मंगल विहार ग्रीनपार्क की ओर हुआ। समाज के लोगों ने जय-जयकारों के साथ गुरुवर की मंगल आगवानी की। करीब एक सप्ताह के प्रवास में गुरुवर ने मंगल प्रवचनों के माध्यम से धर्म प्रभावना की। पश्चात् वहाँ से लाल मन्दिर की ओर विहार हुआ। बीच मार्ग से स्थित इण्डिया गेट का अवलोकन करते हुए दिल्ली लालकिला के सामने स्थित लाल मन्दिर का दर्शन किया। आहारचर्या हुई पश्चात् लोगों के निवेदन पूर्वक गुरुवर का विहार भोलनाथ नगर की ओर हुआ। भोलानाथ नगर में बाजों के साथ गुरुवर का मंगल प्रवेश हुआ और जिनदर्शन के पश्चात् मंगल प्रवचन हुआ।

मंगल प्रवचन के दौरान कमेटी के लोगों ने अक्षय तृतीया पर्व पर गुरुवर का मंगल सान्निध्य की प्राप्ति हेतु श्रीफल भेंट किया। पश्चात् अक्षय तृतीया हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें मूलनायक आदिनाथ भगवान का जिनाभिषेक व विशेष पूजन की गई। पश्चात् गुरुवर का मंगल प्रवचन अक्षय तृतीया पर्व पर सम्पन्न हुआ। पश्चात् मुनिवर ने कृष्णा नगर, कैलाश नगर, कबूल नगर, बलरामनगर आदि मन्दिरों का भी दर्शन किया एवं प्रवचन आदि से धर्म की प्रभावना की।

पश्चात् शान्तिनगर निकेतन से होते हुए गुरुवर का मंगल प्रवेश बड़ागाँव में हुआ। अतिशयकारी श्री पार्श्वनाथ भगवान का दर्शन किया। एक-दो दिन के प्रवास के उपरान्त गुरुवर सराय, बिनोली, वरनाँवा, सरधना, दौहला, मवाना आदि गाँव व नगरों के मन्दिरों का दर्शन करते हुए एवं मंगल प्रवचन एवं आहारचर्या आदि श्रावकों को लाभ प्रदान करते हुए हस्तिनापुर नगर की ओर विहार हुआ।

हस्तिनापुर की पावन धरा पर जहाँ तीन-तीन तीर्थंकर के चार-चार कल्याणक हुए, भगवान आदिनाथ मुनि पर्याय में इच्छुरस का आहार हुआ और अक्षय तृतीया पर्व का प्रादुर्भाव हुआ एवं मुनि विष्णुकुमार ने अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों के उपसर्ग को दूर कर रक्षाबंधन जैसे पर्व का सूत्रपात किया। ऐसी पूज्यनीय धरा पर 10 जून 2010 को गुरुवरश्री आर्जवसागरजी महाराज का मंगल प्रवेश हुआ। मन्दिर एवं क्षेत्र का अवलोकन कर मुनिश्री ने अपने कुशल व्यवहार, शुद्ध आराधना एवं साधना से जनमानस को अपनी ओर आकर्षित किया। हस्तिनापुर कमेटी के लोगों ने शान्तिनाथ निर्वाण महोत्सव पर सम्पन्न होने वाले मेले अपना सान्निध्य प्रदान करने हेतु श्रीफल भेंट कर निवेदन किया। पश्चात् श्री शान्तिनाथ निर्वाण महोत्सव पर श्री जी का मस्तकाभिषेक एवं शान्तिधारा के उपरान्त श्रीजी की स्वर्ण रथोत्सव गुरुवर आर्जवसागर जी के मंगल सान्निध्य पूर्वक बहुत ही धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न हुई। इस कार्यक्रम में उपस्थित अपार जन समूह के बीच मुनिश्री ने मंगल प्रवचन करके उदाहरणों के माध्यम से धर्म की ज्ञान गंगा प्रवाहित करके जेठी के मेले पर श्री दिगम्बर जैन प्राचीन बड़ा मन्दिर में उपस्थित धर्मावलम्बियों को भाव-विभोर कर दिया।

दिनाँक 16 जून 2010 को हस्तिनापुर में गुरुवर श्री आर्जवसागरजी के मंगल सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन प्राचीन बड़ा मन्दिर जी में माँ जिनवाणी की आराधना कर जिनवाणी माता की पालकी यात्रा निकालकर श्रुत पंचमी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें सर्वप्रथम मूलनायक भगवान शान्तिनाथ का मंत्रोच्चारण के साथ जलाभिषेक कर त्रिमूर्ति में पहुँचकर शान्तिधारा की गई। तत्पश्चात् बैंड बाजों के साथ मुनिश्री

आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ के साथ श्री कैलाश पर्वत से जैनागम षट्खण्डागम शास्त्र व माँ जिनवाणी को पालकी में विराजमान करके उनकी शोभायात्रा निकाली गई। पालकी यात्रा मुख्य मन्दिर से प्रारम्भ होकर मुख्यबाजार से होते हुए कैलाश पर्वत की परिक्रमा करा कर मुख्य वेदी के सामने समापन हुई। इस कार्यक्रम में भोपाल, जोबनेर, अलवर, तिजारा आदि से भी लोग सम्मिलित हुये पश्चात् गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें उन्होंने श्रुतपंचमी के पावन दिन की महत्ता बतलाई। आगम लिपिबद्ध कैसे हुये, किससे हुआ इस पर प्रकाश डाला। इसी संदर्भ के दौरान तीर्थ क्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री प्रद्युम्न कुमार जैन मेरठ, श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ, श्री शिखरचन्द्र जैन मेरठ आदि ने श्रीफल भेंट चढ़ाकर महाराजश्री के सम्मुख अपना चातुर्मास इसी पावन धरा पर करने का निवेदन किया। और अलवर की कमेटी के और समाज के लोगों ने भी इस बार का चातुर्मास अपने नगर में संपन्न हो इस भावना से श्रीफल भेंट किये और तिजारा के लोगों ने, पूरी कमेटी के साथ चातुर्मास का अवसर प्राप्त हो इस मंगल भावना श्रीफल के माध्यम से नम्र निवेदन किया। हस्तिनापुर में स्थित जम्बूद्वीप कमेटी के लोग व बहनें कैलाश पर्वत के सामने ठहरे गुरुवर आर्जवसागरजी को जम्बूद्वीप दर्शनार्थ पधारने हेतु नम्र निवेदन लेकर आये। पश्चात् मुनिवर आर्जवसागरजी संघ सहित व भक्त लोगों के साथ जम्बूद्वीप आदि के मन्दिरों के दर्शन हेतु वहाँ पर पहुँचे। आ.रत्न ज्ञानमति माताजी ने अपने संघ सहित गुरुवर की मंगल आगवानी की। पश्चात् साथ रहकर सभी मन्दिरों का दर्शन करवाया और आ. ज्ञानमति माताजी ने गुरुवर से कुछ धार्मिक चर्चायें की तथा स्वरचित शास्त्रों को भी गुरुवर को भेंट किया। पश्चात् सब लोग भेजने भी आये। पश्चात् मुनिश्री ने संघ सहित हस्तिनापुर से विहार कर दिया। मवाना, गंगा नगर होते हुए मेरठ नगर पहुँचे। मंगल प्रवचन एवं आहारचर्या आदि के माध्यम से श्रावकों को धर्म लाभ मिला। पश्चात् ज्ञानश्री स्थली, मोदी नगर ऋषभांचल आदि से विहार करते हुए गुरुवर का ससंघ गाजियाबाद के कवि नगर में भव्य मंगलप्रवेश हुआ। समाज के सभी लोग बाजे के साथ गुरुवर की मंगल आगवानी में सम्मिलित हुये। हस्तिनापुर से गाजियाबाद तक का विहार श्री इन्द्रप्रकाश जैन मवाना मेरठ वालों ने हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न कराया। गाजियाबाद में दैनिक मंगल प्रवचनों के माध्यम से एवं शाम को संस्कार की कक्षा से श्रावकगण बहुत आकर्षित हुये एवं चातुर्मास के लिए नम्र निवेदन किया। फिर भी 15-20 दिन प्रवास के उपरान्त गुरुवर का मंगल विहार हुआ। दिल्ली में स्थित कबूल नगर की समाज भी चातुर्मास हेतु नम्र निवेदन से आती रही। लेकिन गुरुवर का विहार दिल्ली से बाहर तरफ स्थित साहिबाबाद, दिलशाद गार्डन, राम नगर, चन्द्र लोक, बलवीर नगर, कबूल नगर, दरियागंज, महरोली आदि से होते हुए दिल्ली से जयपुर की ओर हो गया। गुरुवर का जब दिल्ली में प्रवेश हुआ तब और जब लौटकर आये तब भी भीषण गर्मी का समय रहते हुए भी गुरुवर ने अपनी चर्या में कोई अन्तर नहीं लाया। आहार चर्या में कुएँ का पानी, श्रावकों के घर पर ही आहार चर्या व नौकरों से या संस्था द्वारा स्थापित चौकाओं में आहार नहीं लेना, निहार के लिए बाहर प्रासुक भूमि नदी किनारे या बंद फैक्टरी आदि में जाना और पंखा, कूलर ए.सी. आदि का उपयोग नहीं करना आदि अपने आगमिक नियमों को कायम रखा। इन सभी चर्याओं को देखकर दिल्ली के श्रावकों ने आश्चर्य करते हुए कहा कि ऐसे सच्चे साधु का दर्शन एवं सेवा की मौका हम लोगों को पहली बार मिला है। ऐसा कहकर वे बहुत हर्षित हुये।

क्रमशः...

अति प्राचीनता के प्रमाण

-श्री नाथूलालजी जैन शास्त्री

वैज्ञानिक शोध और खोज द्वारा यह सिद्ध है कि इस सृष्टि के प्रारंभ का कोई पता नहीं है। इस संबंध में जो कुछ कल्पनायें की गई हैं वे सब निर्दोष नहीं हैं। इसलिये सृष्टि की अनादिता ही मानना चाहिए। मनुष्य जीवन के संबंध में भी यही मान्यता निर्दोष है।

प्राचीनता के संबंध में वर्तमान इतिहासकारों की अनेक कल्पनायें हैं। इतिहासकार 4000 ईसवी पूर्व से भी पूर्व की मानवीय घटनाओं का उल्लेख करते हैं। मिस्र देश की प्रसिद्ध गुम्मटों का रचनाकाल ईसवी से 5000 पूर्व अनुमान किया जाता है। शाल्दिया देश में ईसा से 6-7 हजार वर्ष पूर्व की मानवीय सभ्यता के प्रमाण मिले हैं। चीन देश की सभ्यता इससे भी अधिक की है। अमेरिका में जो खुदाई हुई है उसका भी यही प्रमाण है। पंजाब और सिंघ के संबंध में यहाँ वर्णन किया गया है उससे विश्वसनीय जानकारी प्राप्त हुई है। यही जैन धर्म की ऐतिहासिक प्राचीनता है। पौराणिक और वैदिक प्रमाणों से इससे भी अधिक की इसी पुस्तक में आगे सिद्ध किया गया है कि विदेश एवं देश के महान विद्वानों के अध्ययन द्वारा प्राप्त अभिमत से भी जैन धर्म के संबंध में यथार्थता ज्ञात हुई है जिसका उल्लेख इसमें हैं।

पुराण में वर्णित आयु आदि की दीर्घकालीनता और शरीर आदि की अधिक ऊँचाई तथा प्रलय, सागर आदि का माप वर्तमान जनता की दृष्टि में आश्चर्यकारक है। अत: उनकी दृष्टि विस्तृत होने पर इसका भी समाधान हो सकता है, यह असंभव नहीं ऐसा मानना चाहिए। इसके अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं। भूगर्भशास्त्री-खोजों से 50-50, 60-60 फुट लंबे प्राणियों के पाषाणावशेष (FOSSILS) प्राप्त हुए हैं। इतने लम्बे अस्थि पंजर भी मिले हैं। इन दीर्घ अस्थि पंजिरों से पूर्व काल के प्राणियों की दीर्घकाय एवं आयु का अनुमान युक्ति संगत माना जाता है। सूक्ष्म शरीर व स्थूल शरीर के अनुसार आयु भी न्यूनाधिक होती है। वनस्पतियों में भी हम यह प्रत्यक्ष देखते हैं।

इस आर्य देश में श्रमण और वैदिक दो संस्कृति अत्यंत प्राचीन याने प्रागैतिहासिक है। संस्कृति शारीरिक मानसिक शक्तियों का प्रशिक्षण, दृढ़ीकरण, विकास है।

वाचस्पति गैरोला का अभिमत :-

अपने 'भारतीय दर्शन' पृष्ठ 86 पर लिखते हैं कि ''भारतीय विचारधारा हमें अनादिकाल से ही दो रूपों में विभक्त मिलती है। पहली विचारधारा परम्परामूलक, ब्राह्मण या ब्रह्मवादी रही है जिसका विकास वैदिक साहित्य के वृहद् रूप में प्रकट हुआ है। दूसरी विचारधारा पुरुषार्थमूलक, प्रगतिशील, श्रामण्य या श्रमण प्रधान रही है, जिसमें आचरण को प्रमुखता दी गई है। यह दोनों विचार धारायें एक दूसरे की प्रपूरक रहीं हैं और विरोधी भी। इस देश की बौद्धिक एकता बनाये रखने में दोनों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पहली विचार धारा का जन्म पंजाब तथा पश्चिमी उत्तरप्रदेश में और दूसरी विचारधारा का उद्‌भव आसाम, बिहार, बंगाल, मध्यप्रदेश, राजस्थान तथा पूर्वी उत्तरप्रदेश के व्यापक अंचल में हुआ। श्रमण विचारधारा के जनक थे जैन।''

मोहनजोदड़ो की प्राचीनता :-

सन् 1922 में सिंधु घाटी के उत्खनन से पुरातत्त्व विभाग को मोहनजोदड़ो और हड़प्पा ये दो स्थान प्राप्त हुये। मोहनजोदड़ो पश्चिमी पाकिस्तान में सिंध प्रांत के लरकाना जिले में सिंधु नदी एवं नहर के बीच में विद्यमान है। हड़प्पा मांटगुमरी जिले के अन्तर्गत है। इनमें उपलब्ध मूर्तियों, सीलों, मानव स्कंधों तथा अन्य सामान को देखकर विद्वानों का अभिमत है कि इन स्थानों में श्रमण संस्कृति का गौरवपूर्ण स्थान था।

सर जॉन मार्शल मत :-

वे कहते हैं कि 500 वर्ष पूर्व पंजाब एवं सिंध में आर्यों से पूर्व ऐसे लोग रहते थे जिनकी संस्कृति उच्च कोटि की थी। मोहनजोदड़ो में 2000-3000 ई.पूर्व की प्राप्त एक मानव मूर्ति अन्तिम कुलकर नाभिराय द्वारा ऋषभदेव के राज्याभिषेक की प्रतीत होती है। यह राजवंश का प्रतिनिधि चित्र है। प्रस्तुत वस्त्र एवं केश विन्यास तत्कालीन राज्य परिच्छद का मानांक प्रस्तुत वस्त्र एवं केश विन्यास तत्कानलीन राज्य परिच्छद का मानांक प्रस्तुत करते हैं।

मोहनजोदड़ो में उपलब्ध एक ध्यानस्थ मूर्ति ऋषभदेव की मानी गई है। इस मुद्रा के अध्ययन से मालूम पड़ता है कि आदि ऋषभनाथ दिगम्बर एवं ध्यानमुद्रा में योगमग्न हैं। सिर पर त्रिशूल सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्र रूपी रत्नत्रय का प्रतीक है। मृदु वाणी का प्रतीक लता का एक पत्र मुख के पास निर्मित है। फलित कल्पवृक्ष से परिवेष्टित तीर्थंकर ऋषभदेव के भक्तों को फल प्रदान का प्रतीक है।

नमस्कार करते हुये भरत चक्रवर्ती, उनके पीछे भगवान का चिह्न वृषभ है। नीचे की पंक्ति में भरत सम्राट् के सप्तांग प्रतीक 1. राजा 2. ग्रामाधिपति, 3. जनपद, 4. दुर्ग, 5. भण्डार, 6. षडंगबल, 7. भिन्न श्रेणिव खड़े हैं। यह पुरातत्त्ववेत्ता आचार्य विद्यानंदजी महाराज ने पहचाना है। यह मूर्ति समवसरण में विराजमान ऋषभदेव की है।

वाचस्पति गैरौला के अनुसार मोहनजोदड़ो से प्राप्त ध्यानस्थ योगियों की मूर्ति की प्राप्ति से जैनधर्म की प्राचीनता सिद्ध होती है।

डॉ. विशुद्धानंद पाठक और डॉ. जयशंकरप्रसाद का मत :-

सिंधु घाटी की सभ्यता में प्राप्त योगमूर्ति तथा ऋग्वेद के कतिपय मंत्र ऋषभदेव और अरिष्ट नेमि जैसे तीर्थंकरों के नाम उस विचार के मुख्य आधार हैं। पद्मश्री रामधारीसिंह दिनकर के अनुसार 'मोहनजोदड़ो की खुदाई में योग के प्रमाण मिले हैं और जैनधर्म के आदि तीर्थंकर श्री ऋषभदेव थे जिनके साथ योग और योग की परम्परा उसी प्रकार लिपटी हुई है जैसे कालान्तर में वह शिव के साथ समन्वित हो गई। इस दृष्टि से कई जैन विद्वानों का यह मानना अनुपयुक्त नहीं दिखता कि ऋषभदेव वेदोल्लिखित होने पर भी वेदपूर्व हैं।'

प्रो. रामचंदा का मत है :-

कि ''ऋषभ जिनकी मूर्तियों पर मुकुट में त्रिशूल चिह्न बनने की प्रथा रही है। खण्डगिरि की जैन गुफाओं में (ईसा पूर्व 2 शती) एवं मथुरा के कुषाणकालीन जैन प्रतीकों पर आदि में त्रिशूल चिन्ह मिलता है जो मोहनजोदड़ो के चित्र के अनुकूल ही है (इसके पूर्व का चित्र) जैन प्रतीकों में त्रिशूल की विशेषता है कि यह

रत्नत्रय का द्योतक है उसके द्वारा अपने कर्मों को छेदा जाता है। अतएव अनेक विद्वानों द्वारा त्रिशूल युक्त मोहनजोदड़ो की मुद्राओं को जैनधर्म के चिह्न मानना वास्तविक प्रमाणों पर आधारित है।''

मोहनजोदड़ो के ऐश्वर्य काल में बाईसवें तीर्थंकर अरिष्ट नेमिनाथ का तीर्थकाल चल रहा था अत: वहाँ की जनता में जैनधर्म की मान्यता होना स्वाभाविक है।

काठियावाड़ से उपलब्ध एक ताम्रपत्र में प्रो. प्राणनाथ ने पढ़ा है कि सुमेर नृप नेबुचेद नजर प्रथम गिरिनार पर्वत पर नेमिजिनेन्द्र की वन्दना करने आए थे (जैन गुजराती-भावनगर, 2 जनवरी 1937 पृ. 2)। वह उस सुजाति के शासक थे, जो मूल में सुराष्ट्र (सौराष्ट्र, काठियावाड़) के निवासी थे।

उक्त ताम्रपत्र में सुनृप के ''रेवानगर के राज्य स्वामी'' ठीक वैसे ही लिखा है जैसे कि उपरान्त काल में विभिन्न राजवंशों ने अपने मूल पुरुष के निवास स्थान की अपेक्षा अपने को उस नगर का शासक लिखा है। जैसे राष्ट्रकूट राजा अपने को नगर ''लइलूराधीश्वर'' शिलाहार वंश के राजा स्वयं को नगर पुखराधीश्वर लिखते थे। यह रेवानगर नर्मदा नदी के तट पर जैनों का एक प्राचीन केन्द्र था और आज भी तीर्थ रूप में जैन उसकी वन्दना करते हैं (निर्वाण कांड)। बैवीलोन के उपर्युक्त नवुचेद नजर नरेश अपने को रेवानगर के राज्य का स्वामी घोषित करके यह स्पष्ट करते हैं कि वे मूलत: भारत के निवासी थे।

विद्वानों का मत है कि सुजाति का मूलस्थान सुराष्ट्र (सौराष्ट्र) है और इस सुजाति के लोग बड़े व्यापारी थे। उनके व्यापार के जहाज सुराष्ट्र से ईरान, मेसोपोटीमिया, अरब, मिश्र, मेजेद्रेनियन समुद्र तक एवं दूसरी ओर जावा, सुमात्रा, कंबोडिया, चीन तक जाया आया करते थे। इन सुजाति के लोगों ने विदेशों में उपनिवेश बसाये थे। इनका धर्म जैन था।

जे.एफ. हेवीन्ट कृत प्रागैतिहासिक समय की राजकर्त्री जातियों और विशाल भारत भाग 1 पृ. 26-632 के अनुसार सुमेर लोगों का मुख्य देवता 'सित' (चन्द्रमा) मूल में जून कहलाता था, जिसे सर्वज्ञ ईश कहते हैं। उसे नन्नर (प्रकाश) भी कहते थे। जैनधर्म में आप्त देव सर्वज्ञ एवं सर्वदर्शी माने गये हैं। वे ज्ञानपुंज के प्रकाश कहे गये हैं। चन्द्रदेव (चन्द्रप्रभ) एक अष्टम तीर्थंकर का नाम है। सित शब्द से चन्द्र को देव मानकर ये सुमेर लोग पूजते थे। यों चक्रवर्ती भी सूर्य में जिन (जिनेन्द्र) प्रतिमा मानकर पूजते थे। भगवान पार्श्वनाथ के पूर्वभव आनंद कुमार राजा ने महामह यज्ञ (जिनपूजा विधान) से सूर्य विमान में विद्यमान जिनेन्द्र की विशेष पूजन की थी। सुजाति में एवं अन्य जैनों आदि में सूर्य-चन्द्र (में जिन बिम्ब) की पूजन का प्रचार तभी से प्रचलित हुआ जान पड़ता है। सुमेर एवं सिंधु की मुद्राओं पर इन देवताओं के नाम अर्थात् सित, नन्नर, श्री आदि पढ़े गये हैं।

(इंदिवक भा. 7-8 का परिशिष्ट)

विद्वानों को जैन पुराणों में भी ऐतिहासिक तथ्य ज्ञात होने लगा और वे अरिष्ट नेमि को ऐतिहासिक पुरुष मानने लगे हैं।

प्रो. प्राणनाथ ने सिंधु उपत्यका की मुद्रा नं.449 पर 'जिनेश्वर' पढ़ा था, वह सिंधुलिपि ब्राह्मीलिपि का पूर्वरूप है ऐसा वे मानते हैं। मुद्राओं पर जो नाम और चिन्ह अंकित हैं, उनसे मोहनजोदड़ो की जनता का धर्म

हिन्दू और जैनों का सिद्ध होता है। उन मुद्राओं में श्रीं ह्रीं आदि तांत्रिक देवों का उल्लेख है जैन धर्म में भी श्री ह्री, घृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी ये छः देवियां मानी जाती हैं जो हिमवन आदि कुलाचल पर्वतों पर निवास करती हैं और तीर्थंकरों के गर्भकल्याणक में आकर तीर्थंकर माता की सेवा करती हैं। मुद्राओं पर स्वस्तिक, बैल, हाथी, गेंडा, सिंह, वृक्ष, आदि अंकित हैं, जो तीर्थंकरों की मूर्तियों पर (चिह्न रूप में) मिलते हैं।

1. ई.हिक्क भाग 8 परिशिष्ट पृ. 18

2. प्रो. प्राणनाथ आई.एच.क्यु VIII 27-29

3. ई.हिक्क भाग 8 पृष्ठ 132

4. प्रतिष्ठा सारोद्धार (आशाधर)

क्र. 1 (P.H.CX VI) और नः 7 (P.H.CX VIII) की मुद्राओं पर एक पंक्ति में छह नग्न योगी खड़े हुए बतलाये हैं। उनके आगे एक भक्त घुटने टेके हुए बैठा है, जिसके हाथ में छुरी है। उसके सामने एक बकरी खड़ी है। बकरी के सामने वृक्ष है। उसके बीच में मनुष्याकृति है।

(ई.हिक्का. भाग 8 पृ. 133)

यह दृश्य पशुबलि का बोधक बताया जाता है। भक्त वृक्ष में विद्यमान देवता को बकरी की बलि चढ़ाकर खुश करना चाहता है। वहीं छह योगियों का अंकन इस बलि को न करने का उपदेश देते हुए बताया गया प्रतीत होता है। जैन ग्रंथों में भी भगवान नेमिनाथ के समय में छहः चारण दि. मुनियों के अस्तित्व का पता चलता है। (अंतगत दसाओ (अहमदाबाद)पृ.10) उस समय इससे अहिंसा प्रधान दि. जैन मत का प्रचलित होना विदित होता है।

हड़प्पा से प्राप्त दि. मूर्ति (प्लेट पृ.10) सुन्दर है। उसके हाथ कायोत्सर्ग मुद्रा में हैं। इस मूर्ति का शिर व घुटनों के नीचे का भाग नहीं है। मोहनजोदड़ों में एक सर्पफण वाली पद्मासन मूर्ति सुपाश्र्वनाथ या पार्श्वनाथ तीर्थंकर के समान है।

(प्लेट नं. 13 चित्र नं. 15-16)

मोहनजोदड़ो के जैनों से द्रविड़ जातिका संबंध रहा है और द्रविड़ जैन थे।

(प्रेमी.पृ. 279-280)

पुरातत्त्व में मथुरा का बौद्ध स्तूप और उस की मूर्तियाँ पटना जंक्शन के पास से प्राप्त मौर्य कालीन दिगंबर जैन मूर्तियां (जै.सि.भा.भाग.13.पृ.96) खंडगिरि उदयगिरि धाराशिव, काठियावाड़ (ढंक) की गुफाओं की जिन प्रतिमायें ईस्वी पूर्व 8वीं शताब्दी से प्रथम शताब्दी तक चौबीस तीर्थंकरों की मान्यता को सिद्ध करती हैं। यह हाथी गुफा के शिलालेख से स्पष्ट है कि नन्द सम्राट् कलिंग जिन की मूर्ति को ले गये थे, उसे सम्राट् खारवेल पीछे वापिस कलिंग ले आए। अतः ऋषभ देव तीर्थंकर जैनधर्म के आदि तीर्थंकर थे यह प्रमाणित होता है।

मोहनजोदड़ो का अर्थ है मृतको का टीला। इसके उत्खनन का कार्य 1922-27 ई. के मध्य सरकार के पुरातात्विक विभाग सर्वेक्षण विभाग ने संपन्न किया। खुदाई में जो सीलें प्राप्त हुई, उनसे जैन संस्कृति की

प्राचीनता सिद्ध होती है। इस सिंधु घाटी की संस्कृति से ऋग्वेद से भी पूर्व भारत की सभ्यता की ओर दृष्टि जाना स्वाभाविक है। जैनधर्म प्रागवैदिक है और भारत में योग परम्परा का प्रवर्तक है यह प्रमाणित होता है।

मोहनजोदड़ो की सीलों में जो योगियों की कायोत्सर्ग दिगंबर मुद्राये अंकित हैं उनसे जैन संस्कृति कम से कम 3250 ई. पूर्व पुरानी तो है ही यह स्पष्ट ज्ञात होता है। जैनों के प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ आत्मविद्या के आदि प्रवर्तक हैं। योगविद्या का प्रारंभ क्षत्रियों ने किया। उस युग में मूर्ति शिल्प का भी काफी विकास हो चुका था। सीलों पर कायोत्सर्ग नग्नमुद्रा और बैल का चिन्ह दोनों ही महायोगी ऋषभनाथ की प्रतिमा को जैन सिद्ध कर रहे हैं।

श्रीराम प्रसाद चन्दा तथा महादेवन का मत :-

उन्होंने तथ्यों की जो समीक्षा की है उनसे यह स्पष्ट हो गया है कि सिंधु घाटी संस्कृति में जैनों को एक सामाजिक दर्जा प्राप्त था। सीलों में जो प्रतीक मिलते हैं उनसे तात्कालीन लोकमान्यता का अनुमान लगता है।

त्रिशुल, वृषभ, छहआराओं वाला कालचक्र, कल्पवृक्ष, वेष्टित कायोत्सर्ग प्रतिमायें इत्यादि महत्वपूर्ण हैं।

श्री महादेवन् का अभिप्राय :-

इन्होंने माना है कि मोहनजोदड़ो के सांस्कृतिक घटन के समय जैनों का जो व्यापारिक विस्तार था उससे भी जैन संस्कृति का एक परिदृश्य हमारे सामने आता है। श्री महादेवन् के शोध निष्कर्ष पर श्री एस.वी.दाद की समीक्षा 'संडे स्टेंडर्ड' के 19 अगस्त 1989 के अंक में प्रकाशित हुई थी। दोनों में मोहनजोदड़ों में जैनत्व के होने की सूचनाएँ हैं। (मोहनजोदड़ो जैन परम्परा और प्रमाण-श्री मुनि विद्यानंद, कुन्दकुन्द भारती प्रकाशन, दिल्ली दिसंबर 1986)

नोट:- उक्त स्वस्तिक आदि प्रतीकों का स्पष्टीकरण इसी पुस्तिका में दिया गया है।

प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता डॉ. राखालदास बनर्जी का मत :-

सिंधु घाटी की सभ्यता का अन्वेषण किया है वहाँ के उत्खनन में उपलब्ध सील (मोहर नं.449) पर चित्रलिपि में कुछ लिखा हुआ है। इस लेख को डॉ. प्राणनाथ विद्यालंकार ने 'जिनेश्वर' (जिन-इ-इ सर) पढ़ा है। पुरातत्वेत्ता रायबहादुर चंदा का वक्तव्य है कि सिंधु घाटी की मोहरों में एक मूर्ति प्राप्त होती है, जिसमें मथुरा की ऋषभदेव की खड्गासन मूर्ति के समान त्याग और वैराग्य के भाव दृष्टिगोचर होते हैं। सील नं. द्वितीय एफ.जी.एच. में जो मूर्ति उत्कीर्ण है, उसमें वैराग्य मुद्रा तो स्पष्ट है ही, उसके नीचे के भाग में ऋषभ देव के चिन्ह बैल का सद्भाव भी है। (माडर्न रिव्हयु, अगस्त, 1935 सिंधु फाइव थाउजेंड्स ईयर्स ओल्ड) मथुरा कंकाली टीला के आविष्कार में ऋषभादि तीर्थंकरों की ऐतिहासिकता पर प्रकाश डाला है। वहाँ की पुरातत्त्व सामग्री में लगभग 11 अभिलेख प्राप्त हुए हैं। वहीं एक स्तूप में सं. 78 की 18 वें तीर्थंकर अरहनाथ की प्रतिमा भी प्राप्त है। यह स्तूप इतना प्राचीन है कि इसकी रचना का समय ज्ञात करना कठिन है।

डॉ. विसेट ए. स्मिथ का मत :-

इन के अनुसार मथुरा संबंधी अन्वेषणों से यह सिद्ध है कि जैन तीर्थंकरों का आस्तित्त्व ईस्वी सन् पूर्व

में विद्यमान था। चौबीस तीर्थंकरों की मान्यता सुदूर प्राचीनकाल में पूर्णतया प्रचलित थी ।(दि. जैन स्तूप-मथुरा प्रस्तावना पृ.5)

डॉ. राधा कुमुद मुखर्जी का अभिप्राय :-

इन्होंने सिंधु सभ्यता का अध्ययन कर लिखा है फलक 12 और 118 आकृति 7 (मार्शल कृत मोहन-जोदड़ो) कायोत्सर्ग नायक योगासन में खड़े हुए देवताओं को सूचित करती है। यह मुद्रा जैनयोगियों की तपश्चर्या में विशेष रूप से मिलती है- जैसे मथुरा संग्रहालय में स्थापित तीर्थंकर देव की मूर्ति में। ऋषभ का अर्थ बैल; जो आदिनाथ का चिह्न है। संभव है यह ऋषभ का ही पूर्व रूप हो। यदि ऐसा हो तो शैव धर्म की तरह जैन धर्म का मूल भी ताम्र युगीन सिंधु सभ्यता तक चला जाता है।

(हिन्दुसभ्यता (हिन्दी संस्करण) राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, सन् 1958 पृ.23)

श्री पी.आर. देशमुख का अभिमत :-

इन के ग्रंथ 'इंडससिविलाइजेशन एण्ड हिन्दु कल्चर' में स्पष्ट कहा है कि जैनों के पहले तीर्थंकर सिंधु सभ्यता से ही थे। सिंधुजनों के देव नग्न होते थे। जैन लोगों ने उस सभ्यता को बनाये रखा और नग्नतीर्थंकरों की पूजा की।

सिंधु जनों की भाषा प्राकृत थी। जैनों और हिंदुओं में भाषिक भेद है। जैनों के समस्त प्राचीन ग्रंथ प्राकृत में हैं। विशेषतया अर्धमागधी जबकि हिन्दुओं के ग्रन्थ संस्कृत में। प्राकृत भाषा के प्रयोग से भी यह सिद्ध होता है कि "जैन प्राग्वैदिक हैं और उनका सिंधु घाटी सभ्यता से संबंध था।"

संस्कृति के चार अध्याय, (**रामधारी सिंह दिनकर**) पृ. 130 में लिखा है : -

'ऋषभ देव की कृच्छ साधना का मेल ऋग्वेद की प्रवृत्तिमार्गी धारा में नहीं बैठता। वेदोंल्लिखित होने पर भी ऋषभदेव वेदपूर्व परम्परा के प्रतिनिधि हैं।'

'भारतीय इतिहास और संस्कृति' (डॉ. विशुद्धानंद/डॉ. जयशंकर मिश्र भारतीय विद्या प्रकाशन, 108, कचौड़ी गली, वाराणसी) पृ. 199 देखिये-

"विद्वानों का अभिमत है कि यह धर्म प्रागैतिहासिक और प्राग्वैदिक है। सिंधु घाटी की सभ्यता में मिली योगमूर्ति तथा ऋग्वेद के कतिपय मंत्रों में ऋषभ और अरिष्ट नेमि जैसे तीर्थंकरों के नाम इस विचार के मुख्य आधार हैं। भागवत और विष्णुपुराण में मिलने वाली जैन तीर्थंकर ऋषभदेव की कथा भी जैन धर्म की प्राचीनता को व्यक्त करती है।"

ऋषभदेव तीर्थंकर के ज्येष्ठ पुत्र भरत ने, जिनके नाम से भारत वर्ष है, सर्वप्रथम इस आर्य देश को उन्होंने एक सूत्रता में बांधने का प्रयत्न किया। ऋषभ के एक अन्य पुत्र का नाम द्रविड था। जिन्हें द्रविडों का पूर्वज कहा जाता है। ऋषभदेव द्वारा अनुप्राणित संस्कृति श्रमण संस्कृति कहलाई।

जिस समय मध्यदेश में श्रमण संस्कृति धीरे-धीरे विकसित हो रही थी। उसी समय नागरिक सभ्यता का प्रारंभ नर्मदा नदी के काठे में और सिंधु नदी की घाटी में हो रहा था।

भारतीय पुरातत्व विभाग की ओर से वर्तमान शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में सिंधु प्रांत के लरकाना

जिले के तथा पश्चिमी में पंजाब के माण्टगुमरी जिले में जो खुदाई और शोध खोज हुई उससे भारत में प्राचीन नागरिक सभ्यता के अस्तित्त्व पर प्रकाश पड़ा है। पुरातत्त्वज्ञों ने यह पूरा नगर खोद निकाला है। पक्की ईंटों से सुन्दर भवन, बाजार, चौरास्ते, सभाभवन, अस्त्र-शस्त्र, आयुध, मुद्रायें, मूर्तियाँ, आदि विविध प्राचीन सामग्री वहां से प्राप्त हुई है। गेहूं की खेती, उसका खाद्यान्न में उपयोग, रूई की खेती उसके वस्त्र, स्वर्णाभूषण में एवं प्राचीन विद्याधरों के अविष्कार माने जाते हैं। इस सभ्यता का जीवनकाल ईसवी पूर्व 6000 से लेकर 2500 वर्ष तक रहा प्रतीत होता है। यह सभ्यता पिरामिडों, फैराओं बादशाही के पूर्ववर्ती प्राचीनतम मिश्र की नीलघाटी की सभ्यता तथा पश्चिमी एशिया में दजला फरात की घाटी की सुमेर सभ्यता से भी प्राचीन अनुमान की जाती है।

श्री रामप्रसाद चन्दा का कथन है:-

सिंधुघाटी की अनेक मुद्राओं में अंकित न केवल बैठी हुई देवमूर्तियां योगमुद्रा में हैं और उस सुदूर अतीत में सिंधु घाटी में योगमार्ग के प्रचार को सिद्ध करती हैं बल्कि खड्गासन देवमूर्तियाँ भी योग की कायोत्सर्ग मुद्रा में हैं और यह कायोत्सर्ग ध्यानमुद्रा विशिष्टतया जैन हैं। आदि पुराण आदि में इस कायोत्सर्ग मुद्रा का उल्लेख ऋषभ या वृषभ देव के तपश्चरण के संबंध में बहुधा हुआ है। जैन ऋषभ की इस कायोत्सर्ग मुद्रा में खड्गासन प्राचीन मूर्तियाँ ईसवी सन् के प्रारम्भ काल की मिलती है। प्राचीन मिस्र में प्रारंभिक राज्य वंशों के समय की दोनों हाथ लटकाये खड़ी मूर्तियाँ मिलती हैं।

किन्तु यद्यपि इन प्राचीन मिस्री मूर्तियों तथा प्राचीन युनानी कुरोद नामक मूर्तियों में प्राय: वही आकृति है तथापि उनमें उस देहोत्सर्ग-निस्संग भाव का अभाव है जो सिंधु घाटी की मुद्राओं पर अंकित मूर्तियाँ में तथा कायोत्सर्ग मुद्रा से युक्त जिनमूर्तियों में पाया जाता है। ऋषभ शब्द का अर्थ वृषभ है और वृषभ जैन ऋषभदेव का चिन्ह है।

प्रो. प्राणनाथ विद्यालंकार का अभिमत:-

वे न केवल सिंधुघाटी के धर्म को जैन धर्म से संबंधित मानते हैं वरन् वहां से प्राप्त एक मुद्रा (नं. 449) पर तो उन्होंने जिनेश्वर (जिनइइसरह) शब्द भी अंकित रहा बताया है और जैन आम्नाय की श्री, ह्री, आदि देवियों की मान्यता भी वहाँ रही बतायी है। वहाँ के नागफण के छत्र से युक्त योगी मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं जो सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ की हो सकती है इनका चिन्ह स्वस्तिक है और तत्कालीन सिंधुघाटी में स्वस्तिक एक अत्यंत लोकप्रिय चिन्ह दृष्टिगोचर होता है। सड़के और गलियाँ तक स्वस्तिकाकार मिलती है।

डॉ.हेरास के अनुसार:-

''मोहनजोदड़ो का प्राचीन नाम नन्दुर अर्थात् मकर देश था। नन्दुर लिपि मनुष्य की सर्वप्रथम लिपि तथा यह सभ्यता मनुष्य की सर्वप्रथम सभ्यता थी।''

डॉ. हेरास ने इस सभ्यता को द्रविडीय माना है। 'मकर' नवम तीर्थंकर पुष्पदंत का लांछन है। जानमार्शल सिंधु सभ्यता को उत्तर भारत के मध्य देश में उदित एवं विकसित संस्कृति को मानते हैं। **प्रो. एस.श्रीकंठ शास्त्री** बतलाते हैं कि ''अपने दिगम्बर धर्म, योगमार्ग, वृषभ आदि की पूजा आदि के कारण प्राचीन सिंधु सभ्यता जैन धर्म के साथ अद्भुत सादृश्य रखती है, अत: यह मूलत: अनार्य अथवा कम से कम अवैदिक तो है ही।''

वैदिक सभ्यता

आर्य मूलत: भारत के ही निवासी थे। मध्यप्रदेश के प्राचीन मानव वैदिक आर्यों की ही उस शाखा से संबंधित है जो ऋषभदेव के समय में होने वाले मानवी सभ्यता के उदय के कुछ पूर्व पश्चिमोत्तर प्रदेश की ओर विचरण करके मूलशाखा से प्राय: अलग हो गई इसका एक कारण यह रहा कि उनका प्रवाह और विचरण पूर्व की ओर न होकर पश्चिमी एशियाई देशों की ओर हुआ। वहाँ से उत्तरी एशिया और पूर्वी एवं उत्तरी यूरोप आदि की ओर फैले। इनका प्रधान केन्द्र पश्चिमी एशिया रहा। उनकी एक शाखा ईरान में बस गई। एक अन्य शाखा फिर से भारत में आई। उनके जो जातिबंधु यहाँ पहले से पश्चिमोत्तर प्रदेश में बसे थे, उनमें नया उत्साह डालकर इन्होंने सरस्वती नदी के तट पर अपनी स्थायी बस्तियाँ बनाई, ऋग्वेद के मंत्रों की रचना की और पशुहिंसा युक्त यज्ञवाली वैदिक संस्कृति को जन्म दिया। **प्रो. के.ए. नीलकांत शास्त्री** के अनुसार भारत का वैदिक युग भारतीय-ईरानी सभ्यता के विकास का एक पहलू है। प्राचीन ईरानी और वैदिक संस्कृति की अनेक प्रकार समानता से यह बात सिद्ध है।'' (भारतीय इतिहास, एक दृष्टि, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन पृ.30 द्वि. संस्करण 1966)

मैक्समूलर का अभिमत है कि :-

आदि वैदिक युग और ऋग्वेद के मंत्रों का प्रारंभ काल ई.पूर्व 1200-1000 पर्यन्त निश्चित करते हैं। लोकमान्य तिलक और जैकोवी गणित ज्योतिष के आधार पर उसे ई. पूर्व 6000 व 4000 के मध्य अनुमान करते हैं। ये अतिशयोक्तिपूर्ण माने जाने से बहुमत इस समय को लगभग ई.पूर्व 2000-1000 वैदिक सभ्यता का विकासकाल एवं उत्कर्ष काल मानता है। इसी बीच प्राचीन मिस्र की वंशानुक्रमिक सभ्यता, प्राचीन ईरानी सभ्यता, प्राचीनी चीनी सभ्यता, पश्चिमी एशिया की अस्सुर, बाबुली, खिल्दियन, आदि सभ्यताओं भूमध्य सागर मध्यवर्ती हिट्टी, मितानी आदि सभ्यताओं तथा अमेरिका की माया सभ्यता आदि प्राचीन कालीन सभ्यताओं का आगे पीछे उदय एवं विकास हुआ। वैदिक सभ्यता की विशेषता ऋग्वेद के मंत्रों से जानी जाती है, उसमें ऋषभदेव की स्तुति के भी कुछ मंत्र है।

महामहोपाध्याय डॉ. सतीशचन्द्र लिखते हैं कि :-

जैन मत तब से प्रचलित हुआ है जब से संसार में सृष्टि का आरंभ हुआ है। मुझे इसमें किसी प्रकार उज्र नहीं है कि जैनधर्म वेदांत आदि दर्शनों से पूर्व का है।' यह बात सुनिश्चित है कि जैनधर्म और बौद्धधर्म न हिन्दू थे और न ही वैदिक तथापि वे भारत में ही उत्पन्न हुए और भारतीय जीवन संस्कृति और दार्शनिक चिंतन के अभिन्न अंग रहे हैं। वे शत प्रतिशत भारतीय विचारधारा एवं सभ्यता की उपज है। किन्तु वे हिन्दू नहीं हैं। अतएव भारतीय संस्कृति को हिन्दू संस्कृति कहना भ्रामक है।'

जवाहरलाल नेहरू (डिस्कवरी ऑफ इंडिया)

कोलब्रूक, स्टीवेंसन, एडवर्ड थामस तथा यार्ल खारपेटिएर इन सभी का मत :-

इन आधुनिक विद्वानों का मत है कि जैनधर्म महावीर से अधिक प्राचीन है। खरपेटिएर लिखते हैं कि ''हमें ये दो बातें स्मरण रखनी चाहिए कि जैन धर्म महावीर से निश्चय ही प्राचीन है क्योंकि उनके पहले के

तीर्थंकर पार्श्व एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे और इसलिये मूल धर्म के आचार-विचार महावीर के काफी पहले अस्तित्व में आ गये होंगे।''

(यूवेर द लेवेन देस् जैन-मोन्खेस् हेमचन्द्र (जैनमुनि हेमचन्द्र के जीवन के बारे में) पृ.6. सी.जे.शाह द्वारा उधृत पूर्वा. पृ.191-192)

हड़प्पा की मोहरों पर

1. सील क्रमांक 4318, 210001 प य भर (ण) सील पर उकेरा गया चित्र सौम्य भाव लिए नग्न कायोत्सर्ग मुद्रा में दिखाया गया है। चित्र का संपूर्ण वातावरण जैनों के समान श्रमणिक प्रतीत होता है।

2. सील क्रमांक 4307, 210001 य रह गण्ड/ग्रंथि चित्र में जैनों के समान श्रमणिक परम्परा के एक मुनि की चित्रात्मक अभिव्यक्ति प्रतीत होती है।

3. सील क्रमांक 2222, 1004701, य शासन कृर्त। सींग धारण किये हुए एक व्यक्ति तख्त जैसे आसान पर विराजमान है चित्र योग साधन में रत एक व्यक्ति का है।

4. सील क्रमांक 2410, 100401, य व्रात्य/धर्म स्वसंग जो व्रात्य या धर्म पुरुष अकेला है। जिसने सब बंधनों को त्याग दिया है, अकेला है। छोटे सिंग वाले सांड का चित्र सील पर ऋषभ के प्रतीक के रूप में किया गया है।

5. सील क्रमांक 4303, 216001 सत/सुत ज(द्व) व्रत यह ऋषभ पुत्र जड़ भरत चित्रित है।

नोट:- उक्त सीलों का उल्लेख श्री डॉ. रमेश जैन द्वारा कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ इन्दौर द्वारा प्रकाशित 'अर्हत् वचन' अक्टुबर-दिसंबर 2000 के अंक में पृ. 9-16 पर प्रकाशित सचित्र लेख के आधार पर किया गया है। यह उन्होंने अपने 'सब्जेक्ट मेटर ऑन द हड़प्पन इंस्क्रिपशन्स' शोधपत्र से लिखा है।

1921 में डॉ. बनर्जी का मत :-

इनके द्वारा मोहनजोदड़ो में बौद्ध अवशेषों की खोज में हड़प्पा के समान सीलें प्राप्त की गई किन्तु बौद्ध बिहार में पूर्व की ओर खुदाई करने पर ऐसे महत्व के अवशेष प्राप्त हुए जो बौद्ध अवशेषों से दो या तीन हजार वर्ष पूर्व के थे। इन खोजों के फलस्वरूप यह स्थित हुआ कि मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में आर्य पूर्व कालीन नगर विद्यमान थे और वहाँ से प्राप्त अवशेष एक ही आर्य पूर्व कालीन सभ्यता से संबंद्ध है। जिसका काल ईसा से चार हजार वर्ष पूर्व है।

तथा भारत में आर्यों का प्रवेश ईस्वी पूर्व दो हजार वर्ष तक नहीं हुआ और उनकी सभ्यता का सिंधुघाटी में फैली हुई सभ्यता से कोई संबंध नहीं था। जो स्पष्ट रूप से द्रविड़ों की अथवा आदि द्रविड़ों की सभ्यता थी, जिनके उत्तराधिकारी दक्षिण की अथवा आदि द्रविड़ों की सभ्यता थी, जिनके उत्तराधिकारी दक्षिण भारत में निवास करते हैं। (प्री.ति.इं.भू.पृ.8)

सिंधु घाटी में प्राचीन निवासी कृषक और व्यापारी थे। उनकी उच्च सामाजिक व्यवस्था उनके द्वारा सुनिश्चित और अच्छी रीति से निर्मित नगरों से लक्षित होती है। इस प्रकार द्रविड़ों की अपनी एक पृथक सभ्यता थी।

सिद्धांताचार्य, साहित्यरत्न, न्यायतीर्थ, पूर्व प्राचार्य, सर हुकुमचंद संस्कृत महाविद्यालय, इंदौर

गुरुवर चरण जहाँ पड़े, वहाँ सुख के दल खिले

परम पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ शाहपुर नगर में करीब 3 महीने के प्रवास के दौरान अभूतपूर्व प्रभावना के बाद 23.6.18 दोपहर को गुरुवर का मंगल विहार हुआ। सभी भक्तगण अश्रुपात करते हुए गुरुवर के पीछे-पीछे चलते गये। कमेटी के लोगों ने ठहरने हेतु बहुत आग्रह किया और चातुर्मास की भावना भायी, फिर भी गुरुवर को कोई रोक नहीं पाये। शाम को पड़ारिया जैन मन्दिर का दर्शनकर वहीं पर विश्राम किया।

पश्चात् सानोधा, चना टोरिया वालों ने आकर अपने गांव पधारने हेतु श्रीफल चढ़ाकर निवेदन किया। पश्चात् प्रातः काल सानोधा नगर में बाजों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। भव्य जिनमन्दिर के दर्शन पश्चात् आहारचर्या सम्पन्न हुई। तथा दोपहर में कर्रापुर की समाज ने आकर श्रीफल भेंटकर अपने नगर पधारने हेतु निवेदन किया। तदुपरान्त 25.6.18 को प्रातःकाल के मंगल बेला में कर्रापुर में वाद्यध्वनि के साथ मंगल प्रवेश हुआ। जिनमन्दिर दर्शन के उपरान्त गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये। तदुपरान्त आहार चर्या सम्पन्न हुई। बड़े मन्दिर में तीन दिन प्रवास के उपरान्त गुरुवर का मंगल विहार बंडा नगर की ओर हुआ। 28.6.18 शाम को बण्डा में श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में मंगलप्रवेश हुआ और 29.6.18 को कमेटी एवं समाज के सभी लोगों ने इस वर्ष का वर्षायोग बण्डा नगर में हो इस भावना से श्रीफल अर्पित किये। पश्चात् प्रतिदिन गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये। जिससे सारी समाज बड़ी प्रभावित हुई और दोपहर में पूर्व से ही बड़े मन्दिर में ठहरी हुई आर्यिका 105 ऋजुमति माताजी ससंघ आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ दर्शनार्थ पधारी और एक घंटे तक धार्मिक चर्चायें हुई। कुछ दिन के उपरान्त नैनधरा की समाज ने अपने गाँव में स्थित अतिशयकारी प्रतिमा के दर्शन हेतु पधारने निवेदन किया। बण्डा नगर में करीब 12 दिनों के प्रवास के दौरान प्रवचनादि के माध्यम से बहुत धर्म प्रभावना हुईं। पश्चात् 10.7.18 दोपहर को आचार्यश्री ने ससंघ नैनधरा की ओर मंगल विहार किया। नैनधरा में बाजे व हर्षोल्लास से गुरुवर का मंगलप्रवेश हुआ। यहाँ पर दो दिन का प्रवास रहा तथा दोनों समय प्रातः व दोपहर में गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये। वहाँ की समाज ने ठहरने हेतु निवेदन किया। यहीं पर शाहपुर की पूरी कमेटी के लोगों ने आकर आचार्यश्री के मंगल वर्षायोग शाहपुर में हो इस मंगल भावना से श्रीफल भेंट किये। गुरुवर ने पुण्य बढ़ाने का आशीर्वाद दिया। पश्चात् गुरुवर का मंगल विहार कंदवाँ की ओर हुआ। 12.7.18 को देपहर में कंदवाँ गाँव में मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ पर प्रातःकाल गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये तथा आहारचर्या हुई। तदुपरान्त 13.7.18 को प्रातःकाल वरा की ओर मंगल विहार हुआ। वहाँ पर अहारचर्या के उपरान्त सिद्धक्षेत्र नैनागिरि की ओर मंगल विहार हुआ। शाम को नैनागिरि सिद्धक्षेत्र पर हर्षोल्लास के साथ मंगलप्रवेश हुआ। तदुपरान्त 14.7.18 को प्रातःकाल पूरे मन्दिरों की वंदना की। गुरुवर को अपनी पुरानी बातें जो कि गुरुवर आचार्यश्री विद्यासागरजी के साथ की संस्मरण, मूलाचार की वाचनायें, पञ्चकल्यणक महोत्सव सभी यादें आयी और गुरुवर के मुखारबिन्द से मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान की शान्तिधारा सम्पन्न हुई। गुरुवर की भक्ति करने एवं आहार चर्या हेतु बण्डा एवं दलपतपुर वाले तत्पर रहे और यहीं पर सागर अंकुर कॉलोनि से कमेटी के लोगों ने वर्षायोग की भावना से श्रीफल अर्पित किये और बण्डा वालों ने भी तीन, चार बार श्रीफल भेंटकर वर्षायोग हेतु श्रीफल अर्पित किये। करीब 5 दिन के प्रवास के उपरान्त आचार्य गुरुवर का मंगल विहार

दलपतपुर की ओर हुआ। 18.7.18 को दलपतपुर में वाद्य ध्वनि, जयघोष सह मंगलप्रवेश हुआ। यहीं पर शाहगढ़ से पूरी समाज ने आकर श्रीफल भेंटकर वर्षायोग हेतु निवेदन किया। दलपतपुर के बड़े मन्दिर में भ. नेमिनाथ का मोक्षकल्याणक मनाया गया। गुरुवर के मंगलप्रवचन भी हुये। और बण्डा नगर के सभी मन्दिरों की कमेटी के लोगों ने वर्षायोग बण्डा नगर में करने हेतु नम्र निवेदन किया। पश्चात 20.7.18 को प्रातःकाल की मंगल बेला में बण्डा नगर के पुण्य से बड़ी धूमधाम के साथ वर्षायोग हेतु भव्य मंगलप्रवेश हुआ। जिसमें डीजे-बाजे के एवं अपार जन समूह के साथ भव्य मंगलप्रवेश का नजारा देखने योग्य था। इसी बीच बड़े मन्दिर के अध्यक्ष अशोक ठेकेदार ने अपने बण्डा में स्थित आचार्य विद्यासागर पब्लिक स्कूल में गुरुवर का पादप्रक्षालन एवं आरती उतारी और स्कूल प्रवेश कराकर पूरे स्कूल का अवलोकन कराया। पश्चात् शान्तिनगर मन्दिर में भव्य मंगलप्रवेश हुआ। पश्चात् प्रवचन के समय पुनः पूरी समाज ने वर्षायोग हेतु श्रीफल अर्पित किये। तदुपरान्त 27 जुलाई 2018 को गुरुपूर्णिमा के दिन प्रातःकाल गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी की संगीतमय एवं सजी हुये द्रव्य से भव्य पूजन सम्पन्न हुई। पश्चात् गुरुवर ने प्रवचन में गुरुपूर्णिमा के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा दोपहर में चातुर्मास के मंगलकलशों की स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें दमोह वाली बहिनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। पश्चात् चित्र अनावरण, दीप प्रज्ज्वलन का कार्यक्रम हुआ। तदुपरान्त बाहर से दिल्ली, भोपाल, तमिलनाडु, अजमेर, दमोह, सागर, शाहपुर आदि से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया। पश्चात् चातुर्मास कलश स्थापना हेतु पात्र चयन किया गया। जिसमें प्रथम कलश का सौभाग्य श्री कमलकुमार नीलेशकुमार कंदवाँ (अध्यक्ष) द्वितीय कलश का सौभाग्य श्री अशोककुमार ठेकेदार (बड़े मन्दिर अध्यक्ष) और श्री मेहन्द्रकुमार भूसा, श्री प्रवीणकुमार जैन (महावीर रोड लाइन्स, दमोह) आदि ने भी कलश स्थापना का सौभाग्य प्राप्त किया। पश्चात् आचार्य गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये। पश्चात् प्रतिदिन के मंगलप्रवचन में सुबह सम्यक्ध्यान के ऊपर प्रवचन हुये। तथा दोपहर में रत्नकरण्डक श्रावकाचार, एवं तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा और शाम को गुरु भक्ति, आरती, भजन, स्तोत्र पाठ कार्यक्रम चला। 17 अगस्त की भ. पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव भक्तिपूजन लाडू चढ़ाकर हर्षोल्लास पूर्व मनाया गया। निर्वाण लाडू की प्रतियोगिता भी रखी गयी थी जिसमें बहुत लोगों ने भाग लिया। गुरुवर का मंगलप्रवचन पार्श्वनाथ के जीवन चरित्र पर हुआ। पश्चात् 26 अगस्त को गुरुमुख से पर्व कथानक सुनकर रक्षाबन्धन पर्व एवं श्रेयांस-भगवान का मोक्षकल्याणक महोत्सव मनाया गया। जिसमें सभी ने रक्षा सूत्र बांधकर धर्म की रक्षा करने का संकल्प लिया। और इसी दिन से महापर्व षोडसकारण भी प्रारम्भ हुआ। करीब 60-70 लोगों ने व्रत करने का संकल्प लिया तथा संगीतमय पूजन की गयी। जिसमें स्कूल, कॉलेज जाने वाले बच्चों ने भी लाभ लिया। गुरुवर ने षोडसकारण की महिमा भी बतलाई। तथा तीर्थोदयकाव्य पर प्रवचन और 16 भावनाओं पर प्रवचनों शृंखला प्रारम्भ हुई। 11 सितम्बर को चा.च.आ. शान्तिसागरजी की पुण्य तिथि उनकी स्तुति को गाकर मनायी गयी। आचार्यश्री ने प्रवचन में आ.शान्तिसागरजी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला तथा शाम को प्रश्नमंच भी रखा गया।

पश्चात् 14 सितम्बर से 23 सितम्बर तक पर्यूषण (दशलक्षण) महापर्व महोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया। जिसमें प्रातः संगीतमय अभिषेक, पूजन, दशलक्षण मण्डल विधान, आचार्यश्री के मंगल प्रवचन (प्रत्ये धर्म पर) दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र का वाचन और विवेचन, शाम को प्रतिक्रमण, गुरुभक्ति, आरती और रात्रि ने

विद्वानों के मंगलप्रवचन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये। अन्तिम दिन चतुर्दशी को बड़े मन्दिर से श्री जी की शोभा यात्रा निकली और शान्तिनगर के विशाल पाण्डाल तक पहुँची। वहाँ पर अभिषेक, शान्तिधारा सम्पन्न हुयीं और अपार जन समूह के बीच आचार्यश्री के मंगलप्रवचन हुये। पश्चात् आचार्यश्री ससंघ बड़े मन्दिर तक जुलूस के साथ दर्शन करने गये। पश्चात् 25 व 26 सितम्बर को षोडसकारण महामण्डल विधान सम्पन्न हुआ। और 26 तारीख को क्षमावाणी पर्व भी मनाया गया और 16 कलशों से भी जलधारा सम्पन्न हुयीं। गुरुवर के क्षमावाणी पर विशेष प्रवचन हुये। तथा 30 सितम्बर को 11 अक्टूबर से 21 अक्टूबर तक होने वाले इन्द्रध्वज विधान हेतु पात्र चयन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें सौधर्मइन्द्र श्री सुमत-अनीता जैन भूसावाले, कुबेर श्री जिनेन्द्र-नीलांजना बमाना, महायज्ञनायक श्री विमल-अर्चना बमाना, ध्वजारोहण कर्त्ता श्री अशोककुमार-सुगन्धि ठेकेदार, ईशानइन्द्र श्री कमलेश-प्रीति भड़राना, सानत इन्द्र श्री शैलू-अंकिता, माहेन्द्रइन्द्र राजेश-ऋचा भूसा, श्रावकश्रेष्ठी श्री संजय सुनीता ठेकेदार, यज्ञनायक श्री सुधीर-रोशनी भड़राना और आठ शेष इन्द्र टेकचंद उल्दन, राजकुमार खटौरा, विनयकुमार भड़राना, अनिलकुमार बरा, रमेशकुमार पिडरुवा, पवनकुमार छतरपुरिया, महेन्द्रकुमार नैनधरा, बीरेन्द्रकुमार शिक्षक बण्डा, प्रदीपकुमार झागरी और दुलीचंद मझगुवां तथा महामण्डलेश्वर शंभुकुमार खारमऊ, डी.एल. जैन बण्डा, प्रमोदकुमार घी वाले बण्डा, जयकुमार जैन छतरपुरिया, चन्द्रकुमार डांगीडहर, संजय भायजी बण्डा और अभय कुमार खारमऊ ये भी पात्र रूप से बनवाये गये, जिसकी बोलियों का कार्यक्रम बा.ब्र. अनिल भैया बण्डा ने गरिमापूर्ण ढंग से सम्पन्न करवाया। बीस अष्टकुमारियाँ एवं करीब दो सौ इन्द्र-इन्द्राणियाँ बनकर विधान करने हेतु संकल्पित हुए। इसी तरह आचार्य संघ के लिए चौका नामक गाँव एवं अतिशय क्षेत्र पजनारी के जल-विहार (क्षमावाणी) कार्यक्रम हेतु कमेटियों के द्वारा श्रीफल रखकर सविनय निवेदन किया गया।

★

पुरस्कारों के पुण्यार्जक श्री विनोद कुमार जैन, 591, कंचन विला, कृष्ण विहार, वी.के. कोल नगर, (अजमेर राजस्थान)

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

जून 2018

प्रथम श्रेणी

श्रीमती कमला जैन द्वारा श्री केसी जैन
सरकारी नर्सरी के पीछे, नूतन नगर
खरगौन (म.प्र.)

द्वितीय श्रेणी

श्री हरिशचंद जैन छाबड़ा
63/75, हीरा पथ, मानसरोवर
जयपुर (राज.)

तृतीय श्रेणी

श्री ओमचंद जैन,
8, महावीर कॉलोनी, दाल मिल तिराहा
लश्कर, ग्वालियर-474009 (म.प्र.)

उत्तर पुस्तिका जून 2018

1. 100 वर्ष
2. 7 हाथ
3. 3 उपवास
4. श्रीपाल
5. ना
6. हाँ
7. हाँ
8. हाँ
9. पौष कृष्ण 11
10. एक योजन
11. स्वयंभू
12. भ. महावीर के समवसरण में प्रमुख श्रोता राजा श्रेणिक थे और उन्होंने समवसरण में 60,000 प्रश्न पूछे थे।
13. धन्य
14. सुलोका
15. चन्द्रप्रभा
16. कौशाम्बी
17. गलत
18. सही
19. सही
20. सही

सम्यग्ज्ञान-भूषण तथा सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री .... जिला ....से भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता प्राप्त है ☐ नहीं है ☐ सम्यग्ज्ञान-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ तथा सिद्धांत-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ प्रस्तुत है। मेरा पता :- ....जिला .... प्रदेश .... पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....फोन नम्बर/ मोबाईल ....ई-मेल .... है।

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण हेतु पंजीकृत किया जाता है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....निवासी.. से **भाव विज्ञान पत्रिका** पुर्ण्यार्जक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/-☐ परम संरक्षक रुपये 21000/-☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/-☐सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/-☐ आजीवन (स्थायी) सदस्यता रुपये 1,500/-☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पता :- ....

जिला .... प्रदेश ....पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर/ मोबाईल .... ई-मेल .... है।

दिनांक हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोटः- ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर व रसीद प्राप्त कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : प्रधान सम्पादक-डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, प्रबंध सम्पादक-डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

भाव विज्ञान परिवार

❄❄❄❄❄ शिरोमणी संरक्षक ❄❄❄❄❄

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)।

❄❄❄❄ परम संरक्षक ❄❄❄❄

● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

❄❄❄ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ❄❄❄

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँतारामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● **रामगंजमण्डी** : सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा।

❄❄ पुण्यार्जक संरक्षक ❄❄

● श्री जैन नीरज सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली।

❄ सम्मानीय संरक्षक ❄

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, गोवा ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, भोपाल ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री जैन बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● **जयपुर** : श्री जैन कमलजी काला, कु. इन्द्रसेना जैन, ● **सूरत** : श्री नरेश जैन, (दिल्ली वाले), श्री जैन निलेशभाई शाह। ● **पथरिया (दमोह)** : श्रीमती जैन उषा पदम मलैया।

❄ संरक्षक ❄

● श्री जैन विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● **दिल्ली** : श्री विजयपाल जैन, शाहदरा, श्री राकेश जैन, रोहिणी ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन, गाजियाबाद ● श्री जैन कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● **भोपाल**: श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, श्री प्रेमचंद जैन ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा ● श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी, गुवाहाटी ● श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया, पांडीचेरी ● श्रीमति विमला मनोहर जैन, सूरत ● **जयपुर** : श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), श्री जैन गुणसागर ठोलिया-किशनगढ़-रेनवाल, श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, श्री जैन ओम कासलीवाल, श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, श्री विजय कुमार जैन छाबड़ा ● **उदयपुर** : श्री प्रकाशचंद जैन, श्रीमती निधी राहुल जैन-अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज, श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा ● **इंदौर** : श्री सचिन जैन, स्मृति नगर ● **पथरिया (दमोह)** : श्री मुकेशकुमार जैन (संजय साईकिल)।

❄ विशेष सदस्य ❄

● **दमोह** : श्री मनोज जैन दाल मिल, ● **अजमेर** : श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद ● **सूरत** : श्री जैन हर्षद भाई मेहता, श्री जैन अरविंद भाई गांधी, श्री जैन संयम संदीप भाई शाह, श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी, श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल, श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता, श्री जैन कमलेश शाह, श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह, श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी, श्री जैन नीलकेष बालू शाह मढ़ी, श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान, श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास, श्रीमती जैन गुणमाला देवी दीपचंद सेठी, डॉ. जैन संकेत मेहता ● **भोपाल**: श्री राजकुमार जैन।

❄ नवागत सदस्य ❄

● **बण्डा :** श्री दिनेशकुमार जैन, श्री प्रमोदकुमार जैन, श्री अजित कुमार जैन, श्री वीरेन्द्र जैन शिक्षक, श्री अशोककुमार जैन, श्री महेन्द्र जैन भूसा वाले, श्री जैन हुकुमचंद नाहर, श्री जैन धर्मचंद कंदवा, श्री जैन पवनकुमार छतरपुरिया, श्री जिनेन्द्रकुमार जैन 'शिक्षक', श्री जैन अशोक नायक, श्री प्रकाश चंद जैन, श्री शीतलचंद जैन खटोरा वाले, श्री सुरेशचंद जैन 'बरा', श्री कमलकुमार जैन छापटी, श्री महेन्द्र नरेन्द्र कुमार जैन नैनधरा, श्रीमती सुनीता सुभाषचंद जैन चोका, श्री कमलकुमार जैन, श्री विमलकुमार जैन, श्रीमती सरिता जयकुमार जैन, श्री मुन्नालाल जैन, श्री चौधरी अशोक जैन, श्री छोटेलाल जैन, श्री जैन सनत सोधिया प्रिया स्टुडियो, श्री पदमचंद जैन खटोरावाले, श्री अशोककुमार शिवलाल जैन, श्री सुमत कुमार जैन भूसावाले, श्री जैन चंद्रकुमार डांगीहर, श्री रोहित जैन खोजपुर ● **सागर:** श्री एस.के. जैन स्टेट बैंक,

मोक्षसप्तमी 2018 पर लाडू सजावट प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतियोगी।

मोक्षसप्तमी पर्व पर बण्डा नगर में भ.पार्श्वनाथ को लाडू समर्पण करते हुए भक्तगण।

रक्षा बंधन पर्व पर राखी सजावट प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतियोगीगण।

बण्डा नगर में चौका लगाने आयीं सूरत की महिलाओं ने गुरु को शास्त्र दान दिया।

सोलहकारण पर्व पर पूजन करने वाले पात्रों के लिए कलश प्रदान करते हुए तहसीलदार सुश्री विनीता दीदी, बण्डा।

2018 दसलक्षणपर्व पर गुरुवर से तत्त्वार्थसूत्र का अध्ययन करते हुए बण्डादि नगरों के श्रोतागण।

सोलहकारण विधान में सौधर्मइन्द्र सुमत भूसावाले के लिए कलश प्रदान करते हुए महेन्द्र जैन भूसावाले।

सन् 2018 वर्षायोग बण्डा में सोलहकारण व्रत में लगातार 16 जलोपवास करने वाली श्रीमती गुणवंती बेन मेहता की पारणा कराते हुए भव्यगण।

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

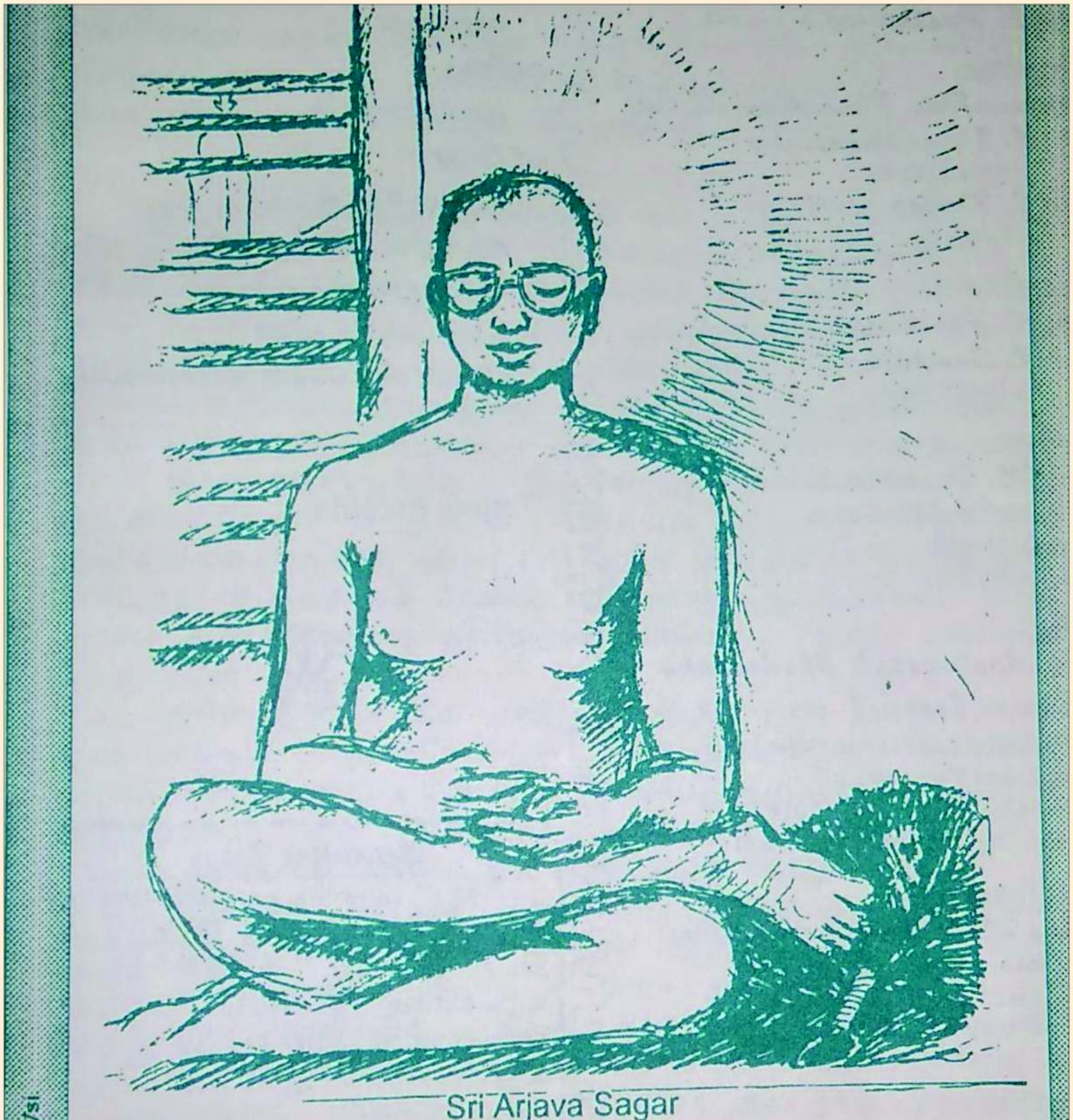

Sri Arjava Sagar

Art by : *Eric Beneteau*, France.

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स,
जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. अजित कुमार जैन, MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 फोन : 0755-4902433, 9425601161